वर्ष 23 । अंक 8 । मार्च, 2022

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

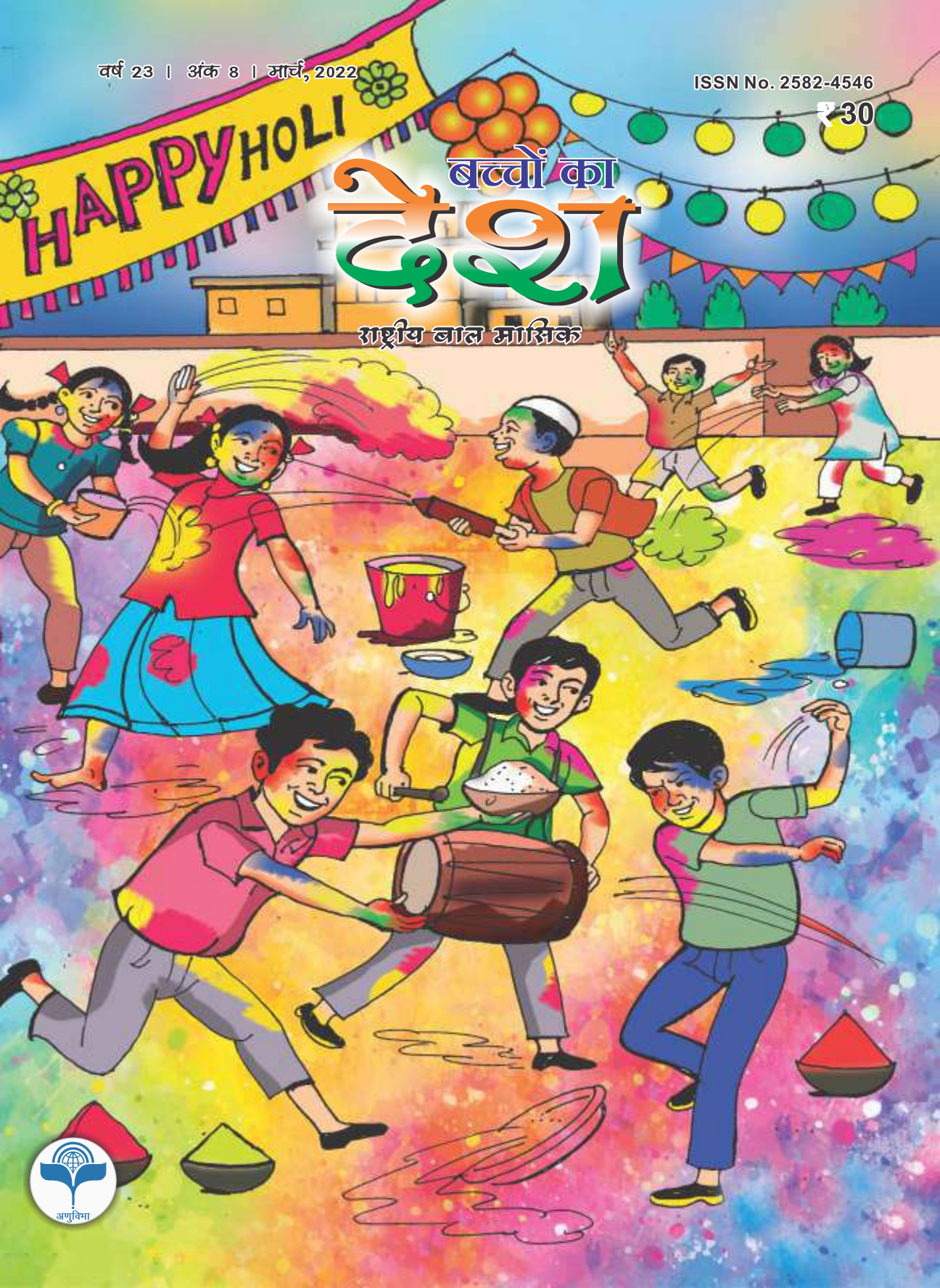

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

एंजल फॉल्स, वेनेजुएला

यह दुनिया का सबसे ऊँचा एकल बहाव वाला झरना है जिसमें 979 मीटर ऊपर से बिना रुकावट के पानी गिरता है। वेनेजुएला के बोलिवर राज्य में स्थित यह झरना यूनेस्को विश्व धरोहर है।

नियाग्रा फॉल्स, अमेरिका

अमेरिका और कनाडा सीमा पर बहने वाली नियाग्रा नदी पर स्थित है नियाग्रा फॉल। यह झरना दुनिया के सबसे सुन्दर झरनों में शामिल है जहां 80 लाख से भी अधिक पर्यटक प्रतिवर्ष इसे देखने के लिए आते हैं।

विक्टोरिया फॉल्स, जिंबाब्वे

दुनिया के सात प्राकृतिक आश्चर्य में शामिल यह यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज झरना दुनिया का सबसे बड़ा झरना है। यह 1.7 किलोमीटर चौड़ा है और इसकी ऊँचाई 108 मीटर है। सूरज की किरणें पड़ने पर यहाँ बहुत ही सुन्दर इंद्रधनुष देखा जा सकता है।

नोहकलिकाई झरना, मेघालय

यह झरना भारत के सबसे ऊँचे झरनों में शामिल है। मेघालय का चेरापूंजी सबसे अधिक बारिश के लिए प्रसिद्ध रहा है। इसी बरसात के पानी से यह झरना बनता है। झरने के नीचे पानी के तालाब बने हैं जहाँ तैराकी की जा सकती है। इस झरने की ऊँचाई 340 मीटर है।

कहाँ क्या?

अंक विशेष

जनरल बिपिन रावत	:	किशोर श्रीवास्तव	– 11
होनहार बच्चे : निकोल ओलिविरा	:	शिखर चन्द जैन	– 14
विश्व वन्य जीव दिवस	:	डॉ. आर.के. गर्ग	– 26
ढाक के तीन पात	:	उषा सोमानी	– 34
रात का राजा : उल्लू	:	कमल सोगानी	– 37
महिला वन डे क्रिकेट विश्वकप	:	अनिल जायसवाल	– 38

कहानी

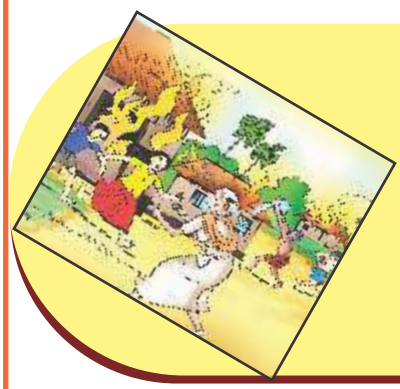

आग में गाँव	:	रजनीकान्त शुक्ल	– 07
शर्त से शरारत भली	:	हरिन्दर सिंह गोगना	– 09
माँ की छांव	:	सुधा भार्गव	– 15
हँसो–हँसाओ	:	डॉ घमंडीलाल अग्रवाल	– 19
शेखू की हेयर स्टाइल	:	सिराज अहमद	– 22
रोहित को मिली सजा	:	सुकीर्ति भटनागर	– 23
तूफान से बड़ी ममता	:	विमला भंडारी	– 31
कविता का अर्थ	:	डॉ. रंजना जायसवाल	– 35
आशु का उद्यान	:	डॉ. शील कौशिक	– 39

कविता-गीत

मकड़ी और मच्छर	:	उदय मेघवाल 'उदय'	– 06
जंगल मे होली	:	डॉ. प्रीति प्रवीण खरे	– 10
होली आई रे	:	शीला पांडे	– 10
मेजर सोमनाथ शर्मा	:	डॉ. वेद मित्र शुक्ल	– 13
मिट्ठू कह कर...	:	डॉ. आर.पी. सारस्वत	– 18
प्रभु से प्रार्थना	:	रेखा लोढ़ा 'स्मित'	– 18
सैर–सपाटा	:	सत्या त्रिपाठी	– 18
खाओ–खाओ	:	दिविक रमेश	– 30

विविधा

बूझो तो जानें : श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'	– 16	रास्ता बताइएः चाँद मोहम्मद घोसी	– 24
वर्ग पहेली : सुधा जौहरी	– 17	पत्र लेखन : नेहा गुप्ता	– 28
दिमागी कसरत : प्रकाश तातेड़	– 21	I like the most	– 46

स्तम्भ

क्या आप जानते हो ? – 2, सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, आओ पढ़ें : नई किताबें – 21, दस सवाल : दस जवाब– 29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये – 30, व्हाट्सएप कहानी– 33, सुडोकू–33, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला – 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार – 44, जन्मदिन की बधाई – 46, चित्र कथा–47, किड्स कॉर्नर–50,

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष - 23 अंक -8 मार्च, 2022

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452
सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651
प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन
कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन | वेणु वरियाथ

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द - 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

एक प्रति : 30 रु.
वार्षिक : 300 रु.
त्रैवार्षिक : 800 रु.
पंचवार्षिक : 1200 रु.
दस वर्ष : 2400 रु.
पंद्रह वर्ष : 7000 रु.
(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर (राज.) से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित
ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने हेतु -

ANUVRAT VISHWA BHARTI
STATE BANK OF INDIA ADB BRANCH Rajsamand
A/c No. : 51040202830 IFS Code : SBIN 0031308

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

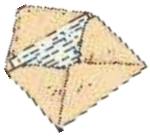

प्यारे बच्चो,

रुचिर और प्रेरक दोनों चचेरे भाई हैं। दोनों हमउम्र हैं। बस एक दिन का ही फर्क है दोनों की उम्र में। रुचिर का जन्मदिन 29 फरवरी का है और प्रेरक का 1 मार्च का। लेकिन दोनों अपना जन्मदिन 1 मार्च को साथ-साथ ही मनाते हैं क्योंकि रुचिर का जन्मदिन तो 4 साल में एक बार ही आता है। दो साल से रुचिर का परिवार दिल्ली रहने लगा है।

पिछले दिनों रुचिर अपने माता-पिता के साथ प्रेरक के घर आया था। स्कूल, ऑनलाइन पढ़ाई से लेकर बेडमिंटन, चैस और अपने मित्रों की तमाम बातें खतम होने का नाम ही नहीं लेती। दोनों परीक्षा की तैयारियों को लेकर बात कर रहे थे। तभी दोनों के माता-पिता भी आ गए- ''अरे बच्चो, क्या गपशप चल रही है?'' रुचिर के पापा बोले।

रुचिर गर्व से बोला- ''पापा, हम एक्जाम के लिए प्लान कर रहे हैं क्योंकि हमें फर्स्ट रैंक लानी है, जो भी हो।'' रुचिर के पापा कुछ कहते इससे पहले ही प्रेरक के पापा रुचिर के पास बैठकर उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोले- ''यदि फर्स्ट रैंक नहीं आई तो?'' रुचिर बोला- ''अंकल फिर तो पढ़ना ही बेकार है। आजकल बिना मैरिट के कोई वैल्यू ही नहीं है।''

प्रेरक के पापा रुचिर की मानसिकता समझ चुके थे। वे जानते थे कि परीक्षा, रैंक और मेरिट के प्रति जरूरत से अधिक चिन्ता कितनी खतरनाक हो सकती है। उन्होंने दोनों बच्चों से एक प्रश्न पूछा- ''परीक्षा में नम्बर कितने आए यह महत्त्वपूर्ण है या सालभर पढ़ाई करके अपने ज्ञान को बढ़ाना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है?''

प्रेरक तो सोचने लगा लेकिन रुचिर तपाक से बोला- ''डेफिनेटली, परीक्षा के नम्बर। उसी से तो हमारी पहचान बनती है।''

''तो फिर बताओ हम अपनी पहचान बनाने के लिए पढ़ते हैं या ज्ञान बढ़ाने के लिए?'' इस बार रुचिर भी सोच में पड़ गया था। प्रेरक के पापा ने समझाया- ''अच्छी रैंक आना अच्छी बात है लेकिन इसे कभी अपना लक्ष्य मत बनाओ। लक्ष्य इसे बनाओ कि जो कुछ पढ़ाया जाता है उसे पूरी मेहनत से मुझे सीखना है, समझना है। रैंक कम आए या ज्यादा, जो कुछ तुमने सीखा है, वह तुम्हारी सबसे बड़ी सफलता है। परिणाम से अधिक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया होती है।''

रुचिर और प्रेरक को सोचने की एक नई दिशा मिली थी। परीक्षा को लेकर उनका तनाव भी कम हो गया था। बच्चो, हर पल सीखने के प्रति जागरूक रहना ही सफलता का मूल मन्त्र है। हार या जीत को कभी अपने ऊपर हावी मत होने दो। दिल से शुभकामनाएँ।

आपका ही,

संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

हल्का-भारी

एक आदमी माल का काफिला लिये जा रहा था । कुछ गधे थे, कुछ घोड़े थे साथ में। रास्ते के बीच में नदी आयी। एक घोड़ा, जिस पर नमक की बोरी लदी हुई थी, बैठ गया। नदी में था पानी। सारा नमक भीग गया। थोड़ी ही देर में रिस–रिसकर बहने लगा। बोरा खाली हो गया। घोड़े का वजन हल्का हो गया।

गधे ने सोचा– ''अच्छा उपाय है यह तो। मैं भी हल्का हो जाऊँ। उपाय अच्छा है।'' वह भी नदी में थोड़ी देर बैठा। परन्तु वह यह नहीं जानता है कि उसके ऊपर क्या लदा है ? ऊपर लदी थी कपास। ज्योंही पानी में इधर–उधर लेटा, बोरी भीग गयी। जो भार पहले था, उससे और भी ज्यादा हो गया। उठा तो हल्का होने की जगह और अधिक भारी हो गया था।

कथा बोध – जब तक विवेक का जागरण नहीं होता, तब तक हम प्रयत्न करते हैं हल्का होने का, और जाने–अनजाने भारी बन जाते हैं।

पद्य कथा

मकड़ी और मच्छर

ताना-बाना बुन मकड़ी ने,
जाला एक बनाया।
तभी कहीं से मच्छर मल भी,
उड़ता-उड़ता आया।

सुनकर तान बेसुरी उसकी,
बोली मकड़ी रानी।
कैसे हो तुम मच्छर भाई?
अपनी कहो कहानी।

मच्छर बिलकुल समझ न पाया,
मकड़ी का यह झाँसा।
मीठी बातों ने मकड़ी की,
मच्छर मल को फाँसा।

मच्छर फिर फँस गया जाल में,
शामत उसकी आई।
दुश्मन पर यूँ किया भरोसा,
अपनी जान गँवाई।

सहसा दुश्मन की वाणी में,
गर आ जाए मिठास।
प्यारे बच्चो, कभी न करना,
उसका तनिक विश्वास।

उदय मेघवाल 'उदय'
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

आग में गाँव

अरुणाचल प्रदेश के छोटे से गाँव निगाम में लगभग एक सौ पैतीस घर हैं जिनमें आठ सौ छप्पन लोग रहते हैं। इसी गाँव का एक निवासी हैं टाई बसर जिनकी सोलह साल की बेटी है इपी बसर। वह 2009 का वर्ष था और सितम्बर महीने की सात तारीख। सुबह से गाँव में हर रोज की तरह चहल–पहल थी। जैसे–जैसे दिन निकलता गया लोग अपने–अपने कामों में व्यस्त होते गए।

दिन में गाँव की महिलाएँ और बच्चे दोपहर का खाना खाकर आराम की मुद्रा में थे। गाँव में लगभग शान्ति छाई थी। इपी बसर भी घर में आराम कर रही थी। उसके मम्मी पापा भी बाहर गए हुए थे। वह इस समय घर में बिलकुल अकेली थी। तभी उसे बाहर की ओर शोर सुनाई दिया। उसने खिड़की से बाहर झाँककर माहौल को समझने की कोशिश की तो उसने लोगों को इधर–उधर भागते और मदद के लिए पुकारते देखा।

वह तुरन्त घर से निकलकर बाहर आई। उसने देखा कि बाहर उसका गाँव चारों तरफ आग की लपटों और धुएँ में घिरा हुआ था। उससे बचने के लिए गाँव के लोग बेतरह भाग रहे थे। उस समय कई घरों के लोग बाहर गए हुए थे। हवा के सहारे आग तेजी से बढ़ रही थी।

अरुणाचल प्रदेश के उस गाँव के अधिकतर मकान लकड़ी और फूस के बने थे। तेज गति से चलने वाली हवा आग की तीव्रता को बढ़ा रही थी। इपी ने सोचा कि ऐसे में अगर कोई भूलवश घर के अन्दर किसी कारण फँसा रह गया तो उसका बचना नामुमकिन होगा।

तभी अचानक इपी बसर को अपने पड़ोस में रहने वाली उन आँटी का खयाल आया जो चलने फिरने से असमर्थ थी। उसे ध्यान आया कि उस समय उनके साथ उनके घर में सात वर्ष की भतीजी भी होगी। यह ध्यान आते ही इपी उन्हें बचाने के लिए उनके घर की ओर दौड पड़ी। उनका घर भी आग की लपटों में घिरा हुआ था। बिना डरे वह उस घर के अन्दर चली गई। वहाँ जाकर उसने देखा कि बाहर के इस सारे शोरगुल और भागदौड़ से अनजान वह विकलांग महिला अन्दर लेटी हुई थीं। बाहर से आग उस घर को अपने लपेटे में ले चुकी थी। इपी ने तुरन्त उस सात साल की बच्ची का हाथ पकड़ा।

अब उसने उस वृद्ध विकलांग महिला को कहा– ''आप हमारे साथ जल्दी बाहर चलो। पूरे गाँव में आग लगी हुई है।'' ''कहाँ, कैसे लगी है आग?''– उसने पूछना चाहा। ''अब ज्यादा समय नहीं है। आपका यह घर भी बाहर से जल रहा है।'' –इपी ने जल्दी से कहा। इपी ने तुरन्त उन्हें सहारा देते हुए उठाया और लगभग घसीटते हुए बाहर लाने की कोशिश करने लगी। एक तो वृद्ध दूसरे चलने फिरने से वे असमर्थ थी।

बड़ी मुश्किल से इपी बसर उन दोनों को उस जलते हुए मकान से बाहर निकालकर ला पाई। उन दोनों को वहाँ से बाहर निकालकर इपी ने सामने सुरक्षित स्थान पर बैठा दिया। अब तक वह मकान पूरी तरह आग की चपेट में आ चुका था। इपी सहायता के लिए चिल्लाई क्योंकि उसे अपना घर भी

देखें पृष्ठ 13...

जीवन विज्ञान के प्रयोग

संकल्प विधि

संकल्प सफलता का स्वर्णिम सूत्र है। इच्छा जब घनीभूत होती है तब दृढ़ निश्चय का रूप ले लेती है। दृढ़ निश्चय के भी अनेक प्रकार होते हैं जिनको जानना बहुत जरूरी है। पहला प्रकार है– योग। हम भीतर और बाहर से तीन योगों द्वारा सम्बन्ध स्थापित करते हैं। ये तीन योग हैं– मन, वचन और काया। इनमें से किसी एक के साथ संकल्प करते समय सम्बन्ध जुड़ता है।

- मन– जो मनन करता है उसे मन कहते हैं। मन के तीन काम हैं– स्मृति, चिन्तन और कल्पना। जब हम संकल्प करते हैं कि मन से हिंसा नहीं करेंगे तब हिंसा करने की स्मृति, चिन्तन और कल्पना पर रोक लगाते हैं
- वचन– सार्थक वाणी को वचन कहते हैं। जब हम संकल्प करते हैं कि वचन में हिंसा नहीं करेंगे तब हिंसक वाणी या भाषा पर रोक लगाते हैं।
- काया– चेतना जिन अंगों व इंद्रियों से काम लेती है उसे काया कहते हैं। जब हम संकल्प करते हैं कि काया से हिंसा नहीं करेंगे, तब शरीर के हिंसक प्रयोग पर रोक लगाते हैं।

'करने' के तीन प्रकार है– करना, कराना, अनुमोदन (समर्थन) करना। इन्हें कारण कहा जाता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह अपने तक ही सीमित नहीं है। परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व से जुड़ा हुआ है। जब वह कोई काम स्वयं करता है तब उसे कहते है ''करना''। जब वह परिवार के सदस्यों, समाज के व्यक्तियों और राष्ट्र के नागरिकों से करवाता है अथवा उनका सहयोग लेकर काम करता है तो उसे कहते हैं ''कराना''। जब किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किये जा रहे कार्य का वह समर्थन करता है तो यह ''अनुमोदन करना'' करना कहलाता है।

जो संकल्प किया जाता है, उसका सम्बन्ध इसके अलावा, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और गुण के साथ भी होता है जैसी परिस्थिति होती है, उसके अनुरुप संकल्प धारण किया जाता है।

उदाहरण–

आपने यह संकल्प किया कि मैं ज्ञान प्राप्त करूँगा। उसके सभी सम्बन्धों को ध्य ान में रखकर आपको इस प्रकार संकल्प करना है :–

- मैं अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के सभी आयामों में मन, वचन एवं काया को संयत करता हुआ ज्ञानार्जन करूँगा।
- द्रव्य की दृष्टि से मेरा संकल्प यहीं तक सीमित है।
- क्षेत्र की दृष्टि से मैं जहाँ रहूँ हर क्षेत्र में संकल्प जारी रहेगा।
- काल की दृष्टि से यह संकल्प 1 वर्ष/2 वर्ष/4 वर्ष अथवा जीवन पर्यंत है।
- भाव और गुण की दृष्टि से यह संकल्प किसी भी प्रकार की प्रियता और अप्रियता से ऊपर है। मात्र उपयोगिता के लिए है।
- गुण से यह संकल्प– संयम और निर्मलता के लिए है।

संकल्प धारण करने के बाद संकल्प की साधना है– प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा। इस तरह संकल्प की गहराई में आकर प्रेक्षा व अनुप्रेक्षा से निरन्तर उसकी सुरक्षा करके संकल्प का विकास कर सकते हैं।

शर्त से शरारत भली

होली के पर्व पर मेहर, रमन, सोनू और मनी पास के पार्क में एकत्र होते थे और खूब खेलते थे। ''अच्छा अब कल वाली शर्त याद है न? हमें नीरज को भी रंग पोतना है तभी तो दो सौ रुपये की शर्त जीतेंगे और घसीटा राम की रेहड़ी पर जाकर गर्म–गर्म पकोड़े खाएँगे...।'' मेहर बोला। ''तुम्हें क्या लगता है नीरज कच्ची गोलियाँ खेला है। हमने बिना सोचे समझे उससे दो सौ रुपये की शर्त लगा दी।'' मनी घास पर बैठते हुए बोला।

दरअसल नीरज को होली खेलना कतई पसन्द नहीं था। कल जब पाँचों दोस्त मिले तो जाते जाते मेहर ने नीरज को चुनौती देते हुए कहा था कि वे होली पर उसे हर हाल में रंग लगा कर रहेंगे। इस पर नीरज ने भी कह दिया कि यदि ऐसा हुआ तो वह शाम को उन्हें दो सौ रुपये देगा और यदि ऐसा न हुआ तो उनसे रुपये लेगा।

होली के पर्व पर चारों नीरज के घर की तरफ चल पड़े। सब ने देखा नीरज घर के आँगन में कुर्सी पर बैठा कोई पुस्तक पढ़ रहा था और घर का गेट एकदम खुला था। चारों की खुशी का ठिकाना न रहा। किसी तरह का प्रयत्न करने की जरूरत न थी बस लपक कर बेखबर बैठे नीरज को रंग पोतना था। चारों दोस्त तेजी से नीरज की तरफ बढ़े। इससे पहले कि वह नीरज तक पहुँचते यकायक चारों दोस्तों को बहुत से हाथों ने दबोच लिया। वे हक्के–बक्के रह गए। दरअसल यह नीरज की चाल थी। उसने पहले ही एक तरकीब सोच रखी थी और गेट के पीछे दोनों तरफ अपने चचेरे चार भाइयों को छुपा दिया था। जिन्होंने उसके चारों दोस्तों को कस कर दबोच लिया था। अब नीरज ने अपने हाथों में लगा रखी तवे की कालिख सबके मुँह पर पोत दी और फिर भीतर जाकर खुद को कमरे में बन्द कर लिया ताकि अब चारों दोस्त उसे रंग न पोत दें। नीरज खिड़की से झाँक कर अपने दोस्तों के काले कलूटे चेहरों को देखकर हँस–हँस कर लोटपोट हो रहा था और ताली बजाते हुए कह रहा था– ''बुरा न मानो होली है... बुरा न मानो होली है।'' चारों दोस्तों ने एक दूसरे के मुख देखे तो पहचान न सके। सब के मुख भयंकर लग रहे थे।

''कैसी रही दोस्त! तुम्हें तो लेने के देने पड़ गए। अब शाम को मिलेंगे। शर्त वाले रुपये तैयार रखना।'' खिड़की में खड़ा नीरज अपने दोस्तों से बोला। चारों दोस्तों की हालत देखने वाली थी। शाम को शर्त के मुताबिक चारों दोस्त नीरज के घर आए और उसे दो सौ रुपये का नोट थमा दिया। अब तक नीरज के पापा को सारी बात मालूम हो चुकी थी। उन्होंने नीरज सहित सभी को भीतर बुलाया और बिठा कर बोले– ''देखो बच्चो, मेरी बात ध्यान से सुनना। मैं नीरज को भी तुम्हारे सामने यही बात समझाने जा रहा हूँ। जीवन में कभी भी शर्त नहीं

देखें पृष्ठ 13...

होली आई रे!

वासन्ती वन, बाग हुए है रौनक आयी रे
टेसू खिले, खिली अमराई मस्ती छायी रे ।

जय की निकली पिचकारी, नैना के गुब्बारे
निधि–कला रंग ले आयीं, सबके मन के प्यारे
अम्मड़–घम्मड़ बजा नगाड़ा, बस्ती भायी रे
बाजारों में रंग उड़े सब, होली आयी रे।...

आपस में करें इशारे ताने फिर पिचकारी
निधि–कला घिरीं बीच में रंगने की है बारी
मनुआ ने पुरजोर बजाया हुई नचायी रे
सरसों ने हँसकर समझाया होली आयी रे।...

दौड़ लगायें निधि–कला बदला लेंगे सारे
नैना जय भागें झटपट सिर पर पग धर, प्यारे
कला आगे कूद पड़ी जा, हुई घेरायी रे
धमा–चौकड़ी प्रेम–प्रीत की होली आयी रे।...

लाल, गुलाबी, नीले हँसते गाते चेहरे
मौसम पर मस्ती चढ़ी है छूट गये सब पहरे
पहन मुखौटे सिर पर टोपी, टोली आयी रे
उड़े गुलगुले, गुझिया उड़ी खाई मिठाई रे।...

शीला पांडे
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

जंगल में होली

गटरू मटरू टर–टर करते,
चूँ–चूँ कर पिचकारी भरते।
नीला रंग लगाना सबको,
जामुनी नहीं भाता हमको।

बन्दर जी तो उछलें कूदें,
हरे रंग की मटकी छू दें।
शेर दहाड़े दिन और रात,
काले रंग की करो न बात।

चींटी को भी मस्ती छाई,
वो बैंगनी रंग ले आई।
मुरगी ने उसको चेताया,
ठंड लगेगी सुनो बताया!

भालू जी सब देखा करते,
चुपके से गुलाल ले बढ़ते।
बगल में खरगोश दुबकाया
रंग लगा बड़ा मजा आया।

तितली रानी उड़कर आई,
मैं ना खेलूँ होली भाई।
टीपू जी ढपली ले आये,
बजा–बजाकर खूब रिझाये।

चमगादड़ हिम्मत दिखलाता,
उल्लू जी को पास बुलाता।
मैं रंग दूँ केसरी तुमको?
गले लगाओ अब तुम हमको।

जिराफ़ ने पकवान बनाया,
खाना खाने हमें बुलाया।
हुरियारों को बहुत नचाया,
फागुन का त्योहार मनाया।।

डॉ. प्रीति प्रवीण खरे
भोपाल (मध्य प्रदेश)

बालक बना महान

भारत के पहले सीडीएस और महान देशभक्त

जनरल बिपिन रावत

जनरल बिपिन रावत एक ऐसा नाम है, जिसे देश ही नहीं सारी दुनिया में सम्मान प्राप्त है। वे भारत के पहले सीडीएस अर्थात् रक्षा कर्मचारियों के प्रमुख (चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ) थे। कुछ समय पूर्व ही तमिलनाडु में वायुसेना का एक हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त होने से उसमें सवार देश के 11 अन्य सैन्य अधिकारियों सहित जनरल बिपिन रावत और उनकी पत्नी श्रीमती मधुलिका रावत का दुःखद निधन हो गया था।

जनरल रावत देश का सर्वोच्च सैन्य पद सँभालने के साथ ही एक शानदार व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने 1 जनवरी 2020 को ही रक्षा प्रमुख के पद का दायित्व ग्रहण किया था। इससे पूर्व वे भारतीय थल सेनाध्यक्ष के पद पर 31 दिसम्बर 2016 से 31 दिसंबर 2019 तक रह चुके थे।

जनरल रावत की शिक्षा-दीक्षा

आपकी शुरूआती शिक्षा देहरादून के कैंबरीन हॉल स्कूल और शिमला के सेंट एडवर्ड स्कूल में हुई। इसके बाद आपको खड़गवासला के राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में दाखिला मिला। जनरल रावत ने भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून से प्रथम श्रेणी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी और यहाँ उनके बेहतरीन प्रदर्शन के लिए उन्हें स्वार्ड ऑफ़ ऑनर दिया गया।

देश सेवा को समर्पित

बिपिन रावत का जन्म 16 मार्च, 1958 को उत्तराखंड के पौड़ी में गढ़वाली परिवार में हुआ था। उनका परिवार कई पीढ़ियों से सेना में रहते हुए देश की सेवा करता आया है। इसी कारण उनमें भी बचपन से ही सेना में जाने की इच्छा थी और उन्हें इसमें सफलता भी मिली। इस प्रकार से जनरल रावत की सेना में पहली तैनाती 16 दिसंबर, 1978 में 11वीं गोरखा रायफल्स की पाँचवीं बटालियन में हुई।

श्री रावत को देशभक्ति और बहादुरी विरासत में मिली थी। उन्होंने उरी, जम्मू और कश्मीर, सोपोर आदि जगहों पर सेना में मेजर, कर्नल और ब्रिगेडियर आदि के पदों पर सालों तक अपनी सेवाएँ दी। 1 सितम्बर 2016 को उन्हें सेना में उप–प्रमुख बनाया गया। इसके बाद उन्हें देश का 27वाँ आर्मी चीफ बनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ।

वह अपने खानदान की तीसरी पीढ़ी के व्यक्ति थे, जिन्होंने देश की सेवा की और देश के प्रथम सीडीएस बने। जनरल रावत ने देश के लिए कई डिफेंस मिशन की अगुवाई की। उन्हें देश के बेहतरीन रणनीतिकारों में गिना जाता था। उन्होंने न केवल देश की सीमाओं को सुरक्षित किया बल्कि देश की रक्षा में अहम् भूमिका निभायी और बुरे वक्त से देश को उबारने में मदद भी की।

चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) क्या है?

दरअसल सीडीएस भारतीय सेना का नया सर्वोच्च पद है, जिस पर तैनात व्यक्ति सरकार को तीनों सेना (नौसेना, वायु सेना और थल सेना) के बारे में सीधे सलाह देता है। इस प्रकार से सीडीएस तीनों ही सेनाओं का मुखिया हैं जो उनके बीच एक कड़ी का काम करता है।

स्कूली जीवन और प्रेरणा

जनरल रावत बचपन से ही साहसी थे। उन्होंने यह बात स्वीकारी थी कि देश की सीमाओं पर होने वाले विवादों के मामले में सख्त फैसले लेने के लिए उनके स्कूल ने ही उन्हें सख्त बनाया था।

उन्होंने कुछ समय पूर्व, कैंब्रियन हॉल स्कूल के स्थापना दिवस एवं वार्षिक समारोह में बतौर मुख्य अतिथि यह बात कही थी। उस समय उन्होंने बताया था कि स्कूल ने उन्हें जो कुछ सिखाया, वह आज सबके सामने है। उनके अनुसार अनुशासन, ईमानदारी और संकल्पबद्धता स्कूल के शिक्षकों से ही उन्हें सीखने को मिली। स्कूल ने उन्हें हमेशा आगे बढ़ने और कठिन कार्य करने की प्रेरणा दी। उन्होंने बच्चों को टीचर का सम्मान करने की प्रेरणा दी।

अपने बचपन के अनुभवों को बच्चों के बीच साझा करते हुए उन्हें बताया था कि सेना का जीवन उन्हें हमेशा आकर्षित करता था। उन्हें बचपन से ही देश की सेवा करने की इच्छा थी। जनरल रावत ने बच्चों का हौसला बढ़ाते हुए कहा था कि कड़ी मेहनत से कभी भी समझौता नहीं करना चाहिए और नाकामियों से निराश नहीं होना चाहिए।

उन्होंने बच्चों के साथ अनुभव साझा करते हुए एक बार कहा– ''उनके विद्यालय का एक छात्र था जो उनसे एक साल आगे था, लेकिन एक बार वह अपनी कक्षा में फेल हो गया और उनके साथ उनकी नौवीं कक्षा में आ गया। कक्षा दस में उसका प्रदर्शन सामान्य रहा और वह पास हो गया लेकिन कक्षा 11 में उसने टॉप करके दिखाया। इससे सभी हैरान रह गए थे। उस समय जब स्कूल के बोर्ड पर परीक्षाफल का विवरण दिया गया, तब उसका नाम उस सूची में सबसे ऊपर था। उसने कड़ी मेहनत एवं लगन से सभी को दिखा दिया था कि जो लोग कभी असफल होते हैं, वह चाहें तो अपनी मेहनत से पुनः सफलता प्राप्त कर दुनिया के लिए एक उदाहरण बन सकते हैं।

अनूठा व्यक्तित्व

जनरल बिपिन रावत एक सच्चे देशभक्त, बेहतरीन जनरल और भारत माता के सच्चे व अमर सपूत थे। इसके अलावा वह अत्यन्त नेकदिल इनसान भी थे। वह जिस जगह पर होते वहाँ के माहौल में ढल जाते थे। अपने देशवासियों के लिए उनके मन में भरपूर प्यार था। वह जिस किसी भी कार्यक्रम में जाते वहाँ पर अपनी अमिट छाप छोड़कर आते थे। लोग जनरल रावत की इस सादगी के अत्यन्त कायल भी थे।

सम्मान और पुरस्कार

सेना में रहते हुए सीडीएस बिपिन रावत को अनेक मेडल से सम्मानित किया गया था। इनमें मुख्यतः परम विशिष्ट सेवा मेडल, उत्तम युद्ध सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, युद्ध सेवा मेडल, सेना मेडल और विशिष्ट सेवा मेडल आदि शामिल हैं। मरणोपरांत उन्हें देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया।

विदा के पल

उनकी वीरगति पर देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं विभिन्न क्षेत्रों की अन्य अनेक बड़ी हस्तियाँ ने शोक प्रकट किया। उनके अन्तिम दर्शन के लिए बड़ी संख्या में देशवासी मौजूद थे। इससे उनके प्रति हजारों, लाखों लोगों के प्रेम और लगाव का पता चलता है। उनकी बेटियों; कृतिका और तारिणी ने मिलकर अपने माता–पिता का पूरे रीति रिवाज से अन्तिम संस्कार किया। जनरल रावत के पार्थिव शरीर को तीनों सेनाओं के अधिकारियों ने कंधा दिया। गाँव निमला निवासी चित्रकार राजपाल सुथार ने सीडीएस जनरल विपिन रावत की अनोखी पेंटिंग बनाकर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने फाउन्टेन पेन से 921 बार जय हिन्द लिखकर उनकी तस्वीर को पूरा किया था । इस देशभक्त मातृभूमि के वीर सपूत को हमारा नमन।

किशोर श्रीवास्तव
ग्रेटर नोएडा (उत्तरप्रदेश)

परमवीर चक्र विजेता

मेजर सोमनाथ शर्मा

भारत माँ की शान रहे जो
परमवीर चक्र के विजेता,
मेजर सोमनाथ शर्मा वो
शौर्य–वीरता के थे प्रणेता।

लड़ करके बड़गाम युद्ध को
काश्मीर को बचा लिया था,
थे पचास पर पाँच शतक को
बच्चो! साहस दिखा दिया था।

एक हाथ से जख्मी लेकिन
एक इंच भी भूमि न छोड़ी,
कुर्बानी की परंपरा ना–
मेजर सोमनाथ ने तोड़ी।

परमवीर के प्रथम विजेता
उनकी गाथा सुनें–सुनाएँ,
अमित शौर्य औ साहस बच्चो!
अपने भीतर चलो जगाएँ।

डॉ. वेद मित्र शुक्ल, नई दिल्ली

'आग में गाँव' पृष्ठ 7 का शेष....

अपना घर भी देखना था पड़ोस में लगी हई जलते मकान की आँच सीधी उसके घर तक पहुँचने वाली थी। वह किसी भी क्षण आग की लपटों में घिर सकता था। आग की लपटें पड़ोसी के घर को स्वाहा करती हुई तेजी से उसके घर की ओर बढ़ रही थी।

वह दौड़ती हुई अपने घर की ओर वापस आई। उसका दिमाग उससे भी ज्यादा तेज गति से दौड़ रहा था कि वह घर की किस चीज को बचाए। सोचते हुए उसके दिमाग में तेजी से एक विचार कौंधा। वह दौड़ती हुई घर की रसोई में जा पहुँची और गैस के सिलेंडर का कनेक्शन हटा दिया। अब वह उस सिलेंडर को लेकर बाहर की ओर दौड़ पड़ी। इपी ने उस सिलेण्डर को घर और आग की पहुँच से काफी दूर फेंक दिया। फिर खुद भी घर से बाहर आग की पहुँच से दूर हो गई।

अब तक गाँव के अन्य लोग भी वहाँ जमा हो चुके थे। उन्होंने देखा कि किस तरह फुर्ती और बहादुरी से इपी बसर ने उस सात साल की बच्ची और वृद्धा की प्राण रक्षा की। जब सारे लोग अपनी–अपनी आग बुझाने में व्यस्त थे। उन सभी के ध्यान में उस वृद्धा व लड़की का खयाल नहीं था। ऐसे में नन्हीं इपी बसर ने साहस के साथ उन दोनों की जान अपनी जान को जोखिम में डालते हुए बचाई।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

'शर्त से शरारत भली' पृष्ठ 9 का शेष....

है बल्कि आपसी प्रेम को कम करती है व भावनाओं को ठेस पहुँचाती है। होली प्रेम, मस्ती और शरारत का त्योहार है न कि शर्त लगाने और जोर जबरदस्ती का। शर्त से तो शरारत भली। शर्त लगाना बुरी आदत है। इससे दूर रहने में ही सबकी भलाई है। एक बात और कि होली पर आपसी प्रेम में कड़वाहट न आए और इसका आनन्द बना रहे इसलिए कालिख या कीचड़ का कभी इस्तेमाल मत करना। हमें होली का त्योहार स्वच्छ ढंग से मनाना चाहिए।''

पाँचों दोस्तों को अपनी गलती का अहसास हुआ। उन्होंने फिर कभी ऐसी गलती न करने का संकल्प किया और नीरज ने शर्त के पैसे दोस्तों को लौटा दिए तो उसके मम्मी उसके दोस्तों से बोली– ''तुम बाहर की घटिया क्वालिटी के तेल से बनी चीजें नहीं खाओ तो बेहतर है। जब कभी भी कुछ खाने का मन हो तो मेरे पास चले आया करो। आजकल मैं यूट्यूब देखकर अच्छी–अच्छी चीजें बनाना सीख गई हूँ।'' यह सुनकर सभी दोस्त हँसने लगे। फिर सभी ने नीरज के मम्मी के हाथों के बने पकौड़े खाए। बाद में नीरज ने भी अपने दोस्तों का मन रखने के लिए होली का रंग लगवा लिया।

हरिन्दर सिंह गोगना
पटियाला (पंजाब)

दुनिया की सबसे छोटी खगोल विज्ञानी

निकोल ओलिवीरा

ब्राजील की 8 वर्षीय बच्ची निकोल ओलिवीरा को दुनिया की सबसे छोटी एस्ट्रोनॉट होने का गौरव हासिल हुआ है। जब उसने चलना सीखा तो सबसे पहले माँ से अपनी दोनों बाँहें फैलाकर आसमान में चमचमाते सितारों को छूने की चाहत जताई।

जुड़ी एस्टेरॉयड हंटर्स प्रोग्राम से

निकोल ने अंतरिक्ष की रहस्यमयी दुनिया को नजदीक से देखने की अपनी तमन्ना को सिर्फ कल्पनाओं तक सीमित नहीं रखा। वह लगातार इस ओर गंभीर प्रयास करती रही। आज वह नासा समर्थित एस्टेरॉयड हंटर्स प्रोग्राम से जुड़ी हुई है जिसके तहत अपने देश के प्रसिद्व अंतरिक्ष विज्ञानियों के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर के सेमिनारों में हिस्सा ले रही है। इस प्रोग्राम में बच्चों और युवाओं को अंतरिक्ष विज्ञान की जानकारी देकर उन्हें अपनी स्पेस डिस्कवरी के लिए प्रेरित किया जाता है ।

खोज लिए 18 एस्टेरॉयड

एक तरफ जब उसकी उम्र के दूसरे बच्चे अपने कमरे की दीवारों पर कार्टून कैरेक्टर्स के पोस्टर चिपकाते हैं, वहीं निकोल के कमरे में आपको सौर मंडल के पोस्टर, मिनिएचर रॉकेट और स्टार वार्स के फिगर मिलेंगे। आप उसे ज्यादातर समय अपने कंप्यूटर के दो बड़े स्क्रीनों पर आसमान की तस्वीरों का अध्ययन करते हुए पाएँगे।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इतनी नन्हीं सी उम्र में ही निकोल ने अब तक 18 क्षुद्र ग्रह खोज निकाले हैं। वह इन क्षुद्र ग्रहों का नामकरण अपने परिवार के सदस्यों और ब्राजील के वैज्ञानिकों के नाम पर करना चाहती है। अगर उसकी इस खोज को सरकारी मान्यता प्राप्त हो जाती है तो वह इस मामले में 18 वर्षीय इटालियन लुईगी सैनीनो का रिकॉर्ड तोड़ने में कामयाब हो जाएगी।

कर्मठ और दयालु

निकोल एक एयरोस्पेस इंजीनियर बनना चाहती है और रॉकेट बनाना चाहती है। वह चाहती है कि ब्राजील का हर बच्चा विज्ञान की पढ़ाई करें। निकोल के एस्ट्रोनॉमी टीचर रोड्रिग्स मोमीरा कहते हैं कि बुद्धिमान और कर्मठ होने के साथ–साथ वह दयालु और मिलनसार भी है। वह अपने सहपाठियों की खूब मदद करती है।

छोटी सी उम्र में मिला टेलिस्कोप

निकोल की अंतरिक्ष के प्रति रुचि इतनी गहरी थी कि 3–4 वर्ष की उम्र से ही वह टेलिस्कोप की जिद करने लगी। उसने अपने माता–पिता से वादा किया कि वह आने वाले वर्षों में किसी बर्थडे पर ना पार्टी करेगी ना गिफ्ट लेगी बस उसे एक टेलीस्कोप दिलवा दिया जाए। आखिर 7 वर्ष की उम्र में उसके माता–पिता और दोस्तों ने पैसे इकट्ठे करके उसे एक टेलीस्कोप दिला दिया।

मिली हस्तियों से

अपने यूट्यूब चैनल पर निकोल ने बड़े–बड़े खगोल विज्ञानियों के इंटरव्यू लिये हैं। अंतरिक्ष में जाने वाले ब्राजील के एकमात्र खगोलविद मार्कोस पोटेंस और सुपरनोवा के आविष्कारक डुईलिया डीमेलो आदि से वह मिल चुकी है। वह अपने देश के विज्ञान मन्त्री से भी मिल चुकी है जिन्होंने उसकी खूब सराहना की।

शिखरचन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

माँ की छांव

पपीहा अपने माँ बाप का इकलौता बेटा था। वे उसका बहुत ध्यान रखते, हमेशा अपने साथ रखते। पर उसके चेहरे पर हमेशा उदासी की परत लगी रहती। उसकी मम्मी कई बार डॉक्टर को दिखाने ले गई पर उसे कोई बीमारी भी नहीं निकली। सुबह रोज घूमना उसके मम्मी–पापा का नियम था। पपीहा को भी साथ ले जाते पर बेटे की हमेशा अँगुली पकड़े रहते। पाँच साल का बच्चा अच्छी तरह भाग सकता था। वह कोशिश भी करता तो यही सुनने को मिलता– ''भागा तो घुटना छिल जाएगा। खून निकल आया तो और मुसीबत।'' वह घुटकर रह जाता।

एक दिन उसने हिम्मत जुटाई। हाथ छुड़ाकर रोनी सी सूरत बनाकर खड़ा हो गया। उसकी आँखों का गीलापन देख माँ आशा सकपका गई। "क्या हुआ बच्चे?'' "बहुत बोर हो रहा हूँ। मुझसे तो कोई बात ही नहीं करता। बस खुद बातें करते रहते हो।'' "हमारी बात सुना करो।" पापा ने कठोरता से कहा। "आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आती। न उनमें मेरा टेडी बीयर होता है न तितली, न फूल। न चन्द्रमा न तारे।" हठात आशा और गौरव ने एक दूसरे की ओर देखा। उन्हें लगा– ''बेटा सच ही कह रहा है।''

शाम होते ही आशा गौरव के आने का इन्तजार करती और वे बातों में इतने मशगूल हो जाते कि पपीहा कुछ समय के लिए उनके दिमाग से निकल जाता। रात में भी खाने के बाद आशा कहती– ''कमरे में जाकर खेलो। सोने से पहले नई किताब देखना नहीं भूलना उसमें बड़े सुन्दर चित्र हैं।'' पपीहा माँ का इंतजार करते–करते बेमन से सो जाता।

आज खाने की मेज पर पपीहा अपने मम्मी पापा के साथ बैठा था। पापा भी चुप, मम्मी भी चुप। पपीहा कभी माँ को देखता शायद कुछ बोले– कभी पापा को देखता शायद वे कुछ बोलें। अचानक खामोशी तोड़ती धीमी सी आवाज आई– "आज पपीहा को मैं अपने हाथ से खिलाऊँगी।" "माँ तुम!" पपीहा चौंक पड़ा। "अरे इतने बड़े को! यह तो अपने आप खाता है। आज क्या हुआ?'' गौरव ने कहा। "बच्चा कभी माँ के लिए बड़ा नहीं होता।" माँ बड़े शांत भाव से बोली।

वह पपीहा को बड़े प्रेम से दाल चावल खिलाने लगी। पपीहा अपनी माँ में एक नई माँ देख रहा था। वह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि उसकी माँ ऐसी भी हो सकती है। इस तरह की माँ का तो उसने बस सपना देखा था। रात में भी सोने से पहले आशा पपीहा के कमरे में जा पहुँची। घुसने से पहले ही उसके कदम ठिठक गए।

उसने सुना– "क्या बात है पपीहा! आज तुम्हारी उदासी कहाँ गई? बड़े मुसकुरा रहे हो। इतना हँसता चेहरा तो मैं पहली बार देख रहा हूँ।" उसके साथ रहने वाला टेडी भालू बोला। जो पपीहा के लिए एक खिलौना ही नहीं जीता जागता साथी भी था। "हाँ टेडी, तुम्हें सुनकर ताज्जुब होगा, आज मम्मी ने मुझे अपने हाथ से खाना खिलाया।" "क्या! अपने हाथ से! मैं तो पहली बार सुन रहा हूँ।" "हाँ हाँ! मुझे लग रहा था खाता ही जाऊँ– खाता ही जाऊँ। क्या करूँ पेट फूलकर गुब्बारा हो गया। उन्होंने मुझसे बातें भी कीं।"

"यह तो जादू हो गया। तेरे मम्मी–पापा को तो फुर्सत ही नहीं थी।'' "ऐसे न बोल टेडी। मुझे मम्मी थोड़ी–थोड़ी अच्छी लगने लगी हैं।" आशा ज्यादा देर अपने को रोक न पाई। दरवाजे में घुसी और स्नेह से पपीहा के सिर पर हाथ फेरती बोली– "बेटा कल तुम क्या खाओगे?" पपीहा और उसका दोस्त तो सकते में आ गए। "मैं–मैं–माँ जो तुम बना दोगी, वही खा लूँगा।" वह हकला उठा। उसने तो सोचा भी न था कि माँ इस तरह से उससे पूछेगी। "तब भी बता दो तुम्हारी क्या पसन्द है?"

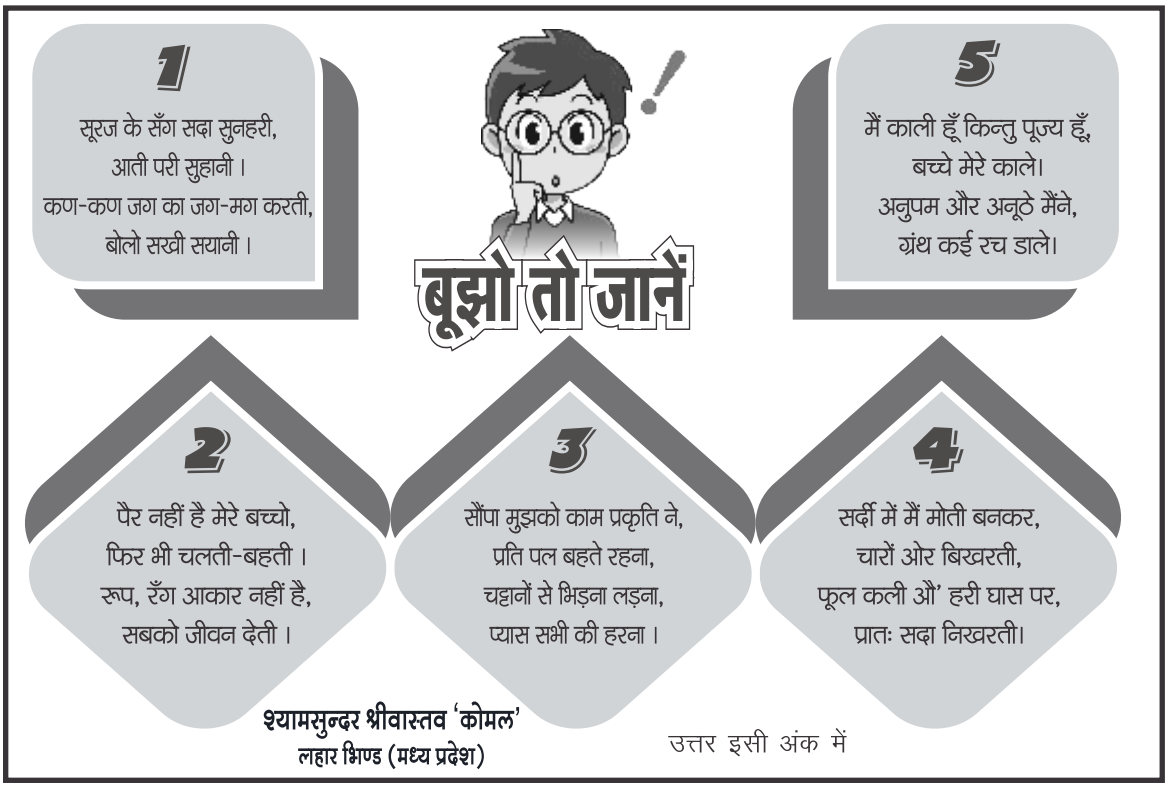

बूझो तो जानें

1

सूरज के सँग सदा सुनहरी,
आती परी सुहानी ।
कण-कण जग का जग-मग करती,
बोलो सखी सयानी ।

5

मैं काली हूँ किन्तु पूज्य हूँ,
बच्चे मेरे काले।
अनुपम और अनूठे मैंने,
ग्रंथ कई रच डाले।

2

पैर नहीं है मेरे बच्चो,
फिर भी चलती-बहती ।
रूप, रँग आकार नहीं है,
सबको जीवन देती ।

3

सौंपा मुझको काम प्रकृति ने,
प्रति पल बहते रहना,
चट्टानों से भिड़ना लड़ना,
प्यास सभी की हरना ।

4

सर्दी में मैं मोती बनकर,
चारों ओर बिखरती,
फूल कली औ' हरी घास पर,
प्रातः सदा निखरती।

श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
लहार भिण्ड (मध्य प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

"मम्मी मैं तो अपनी पसन्द जानता ही नहीं–जानू भी कैसे? आप तो रोज पापा की पसन्द बनाती हो।" "अब से तुम्हारी पसन्द का भी बनेगा बच्चे।" "मैं बताऊँ !'' टेडी अपना भारी भरकम शरीर हिलाता बोला। "हाँ हाँ–बताओ टेडी!" "यह कुछ दिनों से हलुए की बातें कर रहा था– पीला–पीला, बेसन वाला।"

"हाँ माँ जैसा नानी बनाती है मीठा–मीठा खुशबू वाला। पिछले साल हम उनके पास गए थे तब मैंने खाया था। उसमें बादाम और किशमिश भी डाली थीं। क्या टेस्टी था। उसकी बात करते ही मेरे मुँह में तो पानी भर आया है।" "ओह घी–बेसन का हलुआ।'' "हाँ हाँ वही।" पपीहा खुशी के मारे ज़ोर से उछल पड़ा। आशा उसे देखती ही रह गई। सुस्त सा रहने वाला बच्चा इतना चुस्त!

टेडी जम्हाई लेता सोने लगा। "अरे टेडी अभी मत सोना। किताब के कोयल–तोता हमारा इन्तजार कर रहे होंगे। मेरा अकेले तो किताब खोलने को मन ही नहीं करता।" "बेटा आज उसे सोने दे। मैं तेरे साथ किताब देखूँगी।" "आपको कहानी सुनानी आती है क्या? टिंकू मेरा दोस्त तो रोज अपनी दादी से कहानी सुनता है।''

मेरी तो दादी भी नहीं है।" उसका मन खिन्न हो उठा। आशा बच्चे को दुःखी देख खुद दुःख से भर उठी। फिर सँभलती हुई बोली– "टेडी, तुम सो जाओ। मैं पपीहा को कहानी सुना दूँगी।" "तुम्हें मम्मी कहानी भी आती है! रोज कहानी सुनाओगी! "चुप रहने वाला पपीहा अचानक माँ की छांव पाकर चुलबुला हो उठा था। "हाँ... हाँ... रोज सुनाऊँगी।'' "तब तो सारी खतम हो जाएगी।" "खतम होने पर किताब से पढ़कर सुना दूँगी।" "किताबों की कहानियाँ खतम हो गई तो।'' "तो क्या! और किताब खरीद लाऊँगी।" "ओह मम्मी तुम तो बहुत होशियार हो। अब तो तुम मेरी अच्छी मम्मी हो गई हो।"

वह इठलाता हुआ अपनी माँ से लिपट गया। कहानी सुनते–सुनते न जाने कब उसे नींद आ गई। अब उसको न कहानी की चिन्ता थी और न टेडी की। क्योंकि, माँ जो उसके पास थी।

सुधा भार्गव
बैंगलोर (कर्नाटक)

वर्ग पहेली

– सुधा जौहरी
जयपुर (राजस्थान)

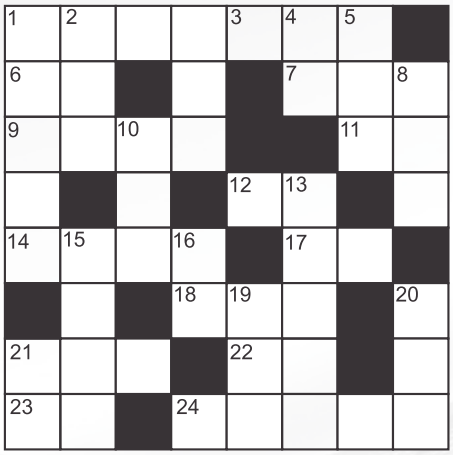

बाएँ से दाएँ

(1) राजस्थान के मुख्यमंत्री (3,4)
(6) बहुमूल्य चमकीला रत्न् (2)
(7) अधिकारी, अफसर (3)
(9) मध्यप्रदेश का एक बड़ा रेलवे जंक्शन (4)
(11) तिब्बत का दुधारू व उपयोगी पशु (2)
(12) गर्मी, बुखार (2)
(14) जमीन पर रहने व चलने वाले जीव (4)
(17) खेत जोतने का उपकरण (2)
(18) बहुत बड़ा व प्रभावशाली (3)
(21) वस्त्र (3)
(22) एक और पाव को कहते हैं... (2)
(23) हानि, नुकसान, टूट–फूट(2)
(24) चिन्तन करने वाला(5)

उत्तर इसी अंक में

ऊपर से नीचे

(1) बर्फ के शिवलिंग वाला तीर्थ जिसके यात्री कश्मीर से जाते हैं (5)
(2) रक्त, खून (3)
(3) ठण्डे का विलोम (3)
(4) धातु जिससे अस्त्र–शस्त्र व औजार बनते हैं (2)
(5) बिस्तर में सिर के नीचे लगाते हैं (3)
(8) दक्षिण में 23.5 डिग्री अक्षांश वाली रेखा (3)
(10) लोभ (3)
(13) कुश्ती लड़ने वाला (5)
(15) धनवान व्यक्ति जिसके पास सौ हजार रुपए हों (4)
(16) सूर्य (2)
(19) हुकूमत करना (3)
(20) टैगोर व सुभाषचन्द्र बोस ने इस प्रदेश में जन्म लिया (3)
(21) कमरा (2)

कवि रहीम कहते हैं...

कि यदि आपका प्रिय व्यक्ति सौ बार भी रूठे, तो भी रूठे हुए प्रिय को मनाना चाहिए, क्योंकि मोतियों की माला टूट जाए तो उन मोतियों को बार–बार धागे में पिरो कर माला बना लेना चाहिए।

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार,
रहिमन फिरि–फिरि पोइए, टूटे मुक्ता हार।

मिट्ठू कह कर ...

मिट्ठू कह कर मुझे बुलाना
बिलकुल नहीं सुहाता है।
सच बोलूँ जो ऐसा करता
मुझको तनिक न भाता है।।

मेरे दादा, परदादा भी
इसी नाम से जाने जाते।
पता नहीं क्यों मिट्ठू–मिट्ठू
कहकर हम पहचाने जाते।।
जो आता है, इसी नाम से
हमको रोज बुलाता है।...

अच्छा हो मेरा भी कोई
नया नाम रख मुझे पुकारे।
हरी, हनी, हीरो या हीनू
जैसे भी कितने हैं सारे।।
हरे–हरे कह, हरी नाम सुन
सब जग खुश हो जाता है।...

मैं जब जाता गाँव लौट कर
सुग्गा कह कर सभी बुलातें
तोता आया, तोता आया
सारे बच्चे हँसी उड़ाते।।
टें टें कर के, नकल बना के
मुन्ना बहुत चिढ़ाता है।
सच बोलूँ जो ऐसा करता
मुझको तनिक न भाता है।।

डॉ. आर. पी. सारस्वत
सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

प्रभु से प्रार्थना

प्रभु! बस इतना सा वर देना
खुशियों से घर को भर देना।।

बच्चों की इच्छा पूरी हो,
और बुराई से दूरी हो।
फूलों से मुस्काएँ हरदम
कभी न कोई मजबूरी हो।।
सबको प्यारा सा घर देना,
प्रभु बस इतना सा वर देना।

पढ़ लिखकर विद्वान बनेंगे,
और देश की शान बनेंगे।
मान करें गुरु मात–पिता का
बच्चे गुण की खान बनेंगे।।
ऐसा चमत्कार कर देना,
प्रभु बस इतना सा वर देना।

ऊँच–नीच का भेद न जाने,
अपने जैसा सबको माने।
जो भी मिले बाँट कर खाएँ
गाएँ मिलकर प्रेम तराने।।
हाथ शीश पर प्रभु धर देना,
प्रभु बस इतना सा वर देना।

रेखा लोढ़ा 'स्मित'
भीलवाड़ा (राजस्थान)

सैर-सपाटा

इतने दुबले मोनू चच्चा,
जैसे पेड़ का पत्ता।
गए घूमने आयी आँधी,
पहुँच गए कलकत्ता।।

कलकत्ता में मिली सड़क पर
उनको मोटी चाची।
चच्चा, चाची को संग लेकर,
पहुँच गए फिर राँची।।

राँची में थे गोलू मामा,
वह चाची के भाई।
मामा के घर उन दोनों ने,
जमकर दावत खाई।।

दावत खाकर ताकत आई,
वजन हुआ अब दूना।
मामा, चच्चा, चाची तीनों,
पहुँच गए फिर पूना।।

मौज मनाकर हँसते–गाते,
जी भर सब हरषाए।
धूमधाम कलकत्ता, राँची,
पुनः कानपुर आए।।

सत्या त्रिपाठी
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

हँसो हँसाओ

पात्र–परिचय

तीन रोगी छात्र– अखिल, अमित एवं नवीन, हँसोड़सिंह (डॉक्टर), देवेन्द्र (कम्पाउंडर), तीन अन्य रोगी लड़के।

(परदा खुलता है। मंच के बीचों–बीच एक बड़ा सा कमरा। कमरे के आगे बोर्ड लगा है– डॉ. हँसोड़सिंह का दवाखाना। डॉक्टर के पास बेंच पर तीनों रोगी लड़के बैठे हैं। पास ही कम्पाउंडर की सीट है।)

डॉक्टर : (रोगी से) क्या नाम है तुम्हारा?

एक रोगी : जी, अखिल। (रजिस्टर में नाम दर्ज करता है।)

डॉक्टर : उम्र? व्यवसाय?

अखिल : 15 वर्ष, विद्यार्थी

डॉक्टर : क्या तकलीफ है तुम्हें अखिल?

अखिल : (रोनी सूरत बनाते हुए) डॉक्टर साहब, मुझे भूख नहीं लगती है। हर समय सुस्ती सवार रहती है और हाँ, मेरी याददाश्त भी कमजोर होती जा रही है।

डॉक्टर : अच्छा! देवेन्द्र, इंजेक्शन लगाओ।

अखिल : (घबराकर) इंजेक्शन! नहीं, नहीं! मुझे इंजेक्शन से डर लगता है।

(दूसरे रोगी हँसते हैं। अखिल वहाँ से भागने की कोशिश करता है लेकिन कम्पाउंडर उसे पकड़ लेता है।)

डॉक्टर : अखिल, अपना दायाँ हाथ इधर बढ़ाना तो!

(डॉक्टर इंजेक्शन लगाता है फिर बोलता है।) देखो, अखिल बेटा! मैं तुम्हें तीन दिनों की दवा देता हूँ। रोज दिन में तीन बार लेना और हाँ...!

(डॉक्टर बोलते–बोलते रुक जाता है।)

अखिल : (डॉक्टर से) डॉक्टर साहब, आप आगे बोलते–बोलते रुक क्यों गए?

डॉक्टर : बताता हूँ, बताता हूँ।

अखिल : जल्दी बताइए न डॉक्टर साहब!

डॉक्टर : एक काम और करना पड़ेगा तुम्हें दवा लेने के साथ–साथ?

अखिल : वह क्या भला?

डॉक्टर : (मुस्कराकर) हाँ, तुम खूब हँसा करो मेरी तरह। हरदम ठहाके मार–मार कर हँसने से सभी बीमारियाँ गधे के सींग की भाँति रफूचक्कर हो जाती हैं। जानते हो, हँसी सेहत बनाने का सबसे सरल एवं महत्त्वपूर्ण नुस्खा है।

(अखिल कम्पाउंडर से दवा लेकर उसे दवा के रुपये देता है तथा फीस के भी!)

(रजिस्टर में नाम लिखता है।)

डॉक्टर : (दूसरे रोगी से) क्या नाम है तुम्हारा?

उम्र?

रोगी : अमित। 14 वर्ष।

डॉक्टर : क्या करते हो?

अमित : जी आठवीं क्लास में पढ़ता हूँ।

डॉक्टर : क्या तकलीफ है तुम्हें अमित?

अमित : (मुँह लटकाकर) डॉक्टर साहब, मैं दिन भर खाता रहता हूँ, फिर भी पिद्दी का पिद्दी हूँ। न जाने क्यों मेरी सेहत बनती ही नहीं है? (सभी हँसते हैं।)

डॉक्टर : ठीक है।

(डॉक्टर कम्पाउंडर को इंजेक्शन में दवा भरने का निर्देश देता है।)

डॉक्टर : (अमित से) दाहिना हाथ आगे बढ़ाओ?

(इंजेक्शन लगाता है।)

अमित : डॉक्टर साहब, कोई सस्ता सा नुस्खा बताइए न?

डॉक्टर : ठीक है।

(हामी भरता है। फिर थोड़ी देर सोचता है।)

अमित : क्या सोच रहे हैं डॉक्टर साहब?

डॉक्टर : सस्ते नुस्खे के बारे में।

अमित : तो, याद आया क्या?

डॉक्टर : हाँ, याद आ गया। सबसे सस्ता नुस्खा है–हँसी। तुम पूरे दिन खूब खुल कर हँसा करो। कम खाओ, गम खाओ। बस। (वातावरण में हँसी की गूँज)

अमित : और कुछ डॉक्टर साहब?

डॉक्टर : हाँ, मेरी फीस के पाँच सौ रुपये!(फिर से हँसी की गूँज। अमित अपनी जेब में से सौ–सौ के पाँच नोट निकालता है तथा डॉक्टर की ओर बढ़ाता है।)

डॉक्टर : (खुश होकर अगले रोगी को बुलाता है।) तुम्हारा नाम?

रोगी : नवीन। (रजिस्टर में नाम लिखता है।)

डॉक्टर : क्या रोग है तुम्हें?

अमित : जी, मोटापा। (हँसी।)

डॉक्टर : उम्र?

नवीन : 14 वर्ष।

डॉक्टर : कैसा महसूस करते हो?

नवीन : (दुःखी होकर) उठना, बैठना, पढ़ना, घूमना सबसे वंचित हूँ मैं इस मोटापे के कारण! बड़ी चिन्ता लगी रहती है मुझे! कछ इलाज बताइए न!

डॉक्टर : (मुस्कराकर) कितनी रोटियाँ खाते हो एक बार में?

नवीन : (माथे से पसीना पोंछकर) सिर्फ एक दर्जन।

डॉक्टर : (हैरानी से) पूरे दिन में?

नवीन : दो दर्जन। (ठहाके ही ठहाके।)

डॉक्टर : फिर तो तुम्हारा स्पेशल इलाज करना पड़ेगा। (थर्मामीटर से ताप मापकर) ये लो दवा। दिन में चार बार।

नवीन : परहेज?

डॉक्टर : एक बार में केवल दो रोटियाँ, एक कटोरी सब्जी, एक गिलास पानी, कसरत तथा खुलकर हँसना। एक सप्ताह बाद फिर आना। समझे?

नवीन : जी, सब समझ गया।

डॉक्टर : फीस के पाँच सौ रुपये?

(नवीन जेब से पाँच सौ रुपये का नोट निकालकर देता है।)

नवीन : अच्छा, डॉक्टर साहब नमस्ते!

(तभी स्ट्रेचर पर लदे हुए तीन अन्य रोगियों का दवाखाने में प्रवेश। कराहने की आवाजें तेज होती जाती हैं।)

तीनों रोगी : (एक साथ) हम तो लुट गए डॉक्टर साहब, आपके सस्ते नुस्खे से! खूब हँसे थे हम तो ठहाके मार–मार कर। फिर भी...! उसी का यह नतीजा है, देख रहे हैं न?

(अखिल, अमित तथा नवीन की उत्सुकता बढ़ जाती है। वे रुक जाते हैं और पूरा माजरा जानने की कोशिश करते हैं।)

डॉक्टर : (हैरत से) क्या मतलब? साफ–साफ

कहो!

पहला रोगी : डॉक्टर साहब! एक दिन मैं खूब ठहाके मार–मार कर हँस रहा था कि सामने से एक पहलवान गुजरा। उसने सोचा कि शायद मैं उस पर हँस रहा हूँ। बस फिर...! (अन्य लड़के हँसते हैं।)

डॉक्टर : (दूसरे रोगी से) तुम्हारा यह हाल कैसे हुआ?

दूसरा रोगी : उस दिन मैं खड़ा–खड़ा हँस रहा था। सामने से कुछ लोग एक मुर्दा ला रहे थे जलाने के लिए। उन्होंने ही मेरी यह हालत बना दी है, डॉक्टर साहब!

(फिर से हँसी गूँजती है।)

डॉक्टर : (तीसरे रोगी से) आप भी बताइए अपनी व्यथा–कथा?

तीसरा रोगीः मैं एक दिन एक भिखारी को देखकर जोर–जोर से हँस रहा था। तभी कुछ गुंडों ने मुझे बुरी तरह से पीटा और मेरी यह हालत बना डाली।

डॉक्टर : (दुःखी स्वर में) हाँ, तो अब आई बात समझ में!

(थोड़ी देर में चुप हो जाता है। फिर बोलता है।)

डॉक्टर : अरे मूर्खों! तुम मेरा दवाखाना ही बन्द करवा दोगे। मैंने तुम्हें पहलवान, गरीब, असहाय, मुर्दे आदि को देखकर हँसने को थोड़े ही कहा था!(माथा ठोंकता है।)

तीनों रोगी : (एक साथ) क्या हुआ डॉक्टर साहब?

डॉक्टर : (चेतावनी देते हुए) याद रखना, आगे से कभी भी उपरोक्त व्यक्तियों पर मत हँसना।

(तीनों रोगियों के साथ–साथ अखिल, अमित तथा नवीन भी हामी भरते हैं। डॉक्टर तीनों रोगियों का इलाज करने लगता है। कम्पाउंडर भी इस काम में सहायता करता है। नेपथ्य से गीत बजता है।)

हँसी... हँसी... हँसी...
सेहत बनाती हँसी।

डॉ.घमंडीलाल अग्रवाल
गुरुग्राम (हरियाणा)

यह एक पहेली कहानी है जिसे ध्यानपूर्वक पढ़कर आपको विलोम शब्द के कम से कम 10 जोड़े खोजने हैं।

लीना के घर का आगे का भाग कच्चा था। सर्दी के दिन होने पर वह बाहर आँगन में बैठकर धूप में रेत का घर बनाती मगर तभी उसकी छोटी बहन छाया अन्दर से आकर उसे बिगाड़ जाती। तब वह बहुत नाराज होती और अपनी माँ से शिकायत करती। माँ उसे समझाती, तू भी छोटी थी तब भैया को ऐसे ही सोते समय रात को तंग करती थी। छाया भी जब बड़ी हो जाएगी, तब ऐसा नहीं करेगी।

गर्मी की छुट्टियों में लीना के भाई विजय ने कागज का एक सुन्दर रंगीन फूल बनाया और लीना को दिया तो वह बहुत प्रसन्न हो गई। तभी छाया ने वह फूल छीनकर घर के पीछे काँटों में फेंक दिया तो उसका मन दुःख से भर गया किन्तु भाई ने हार नहीं मानी। उसने पक्का इरादा किया और काँटे हटाकर फिर से फूल को लेकर आ गया। फिर से फूल पाकर लीना ने भाई को धन्यवाद कहा।

उत्तर इसी अंक में

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

शेखू का हेयर स्टाइल

शेखू खुशी–खुशी अब्बू के साथ बाल कटाने नाई की दुकान पर जा पहुँचा। दुकान पर भीड़ बिलकुल न थी इसलिए फौरन उसका नंबर आ गया। "कैसा काट दूँ भाई?" नाई ने अब्बू की तरफ देखकर पूछा। "अरे! जैसे आपके हैं, ऐसे ही?" अब्बू ने धीमी आवाज में कहा। नाई गंजा था। उसने विग लगा रखी थी। उसने मशीन उठायी और शेखू के सिर पर चलानी शुरू कर दी। शेखू कुछ समझ पाता इससे पहले उसके लम्बे बाल जमीन पर जा गिरे।

उसने जब अपना चेहरा घुमा–घुमाकर आईने में देखा तो उसका मूड खराब हो गया। पूरे सिर पर नाई ने एक नंबर की मशीन चला दी थी। उसने गुस्से से नाई की तरफ देखा तो नाई ने अँगुली से अब्बू की तरफ इशारा कर दिया।

अब्बू ने जब उसका उतरा चेहरा देखा तो पूछा– "क्यों शेखू? हेयर स्टाइल कैसी लगी?" शेखू ने सिर झुकाकर नीचे गिरे हुए अपने बालों को देखा फिर अब्बू की तरफ देखकर मुँह बनाकर 'ना' में जोर से सिर हिला दिया।

अब्बू को लगा उनसे गलती हो गई। फिर नाई की तरफ इशारा करते हुए बोले– "देखो भाई साहब के बाल भी तो आपके जैसे ही है। अच्छे तो लग रहे हो!" शेखू ने फिर से 'ना' में सिर हिलाकर अपनी मर्जी बता दी कि उसे यह हेयर स्टाइल बिलकुल पसन्द नहीं आयी। लेकिन अब क्या हो सकता था? वह उसे साथ लेकर घर की ओर वापस चल पड़े।

अब्बू उसे रास्ते भर उसकी हेयर स्टाइल के फायदे गिनाते रहे। लेकिन वह शेखू के चेहरे पर मुस्कुराहट लाने में कामयाब न हो पाए। अब्बू ने जब उसे उसकी मनपसन्द चॉकलेट और लॉलीपॉप दिलाया, तब कहीं जाकर उसका बिगड़ा हुआ मूड सही हुआ। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट देखकर अब्बू को सुकून मिला।

वे दोनों हँसते–मुस्कुराते हुए घर पहुँचे तो शेखू को देखकर अम्मी, अब्बू पर चिल्ला पड़ी– "ये क्या हुलिया बना दिया इसका, सारे बाल ही गायब करा दिए, अगले महीने ईद है, नए कपड़े पहनेगा। कैसा लगेगा?" अम्मी की बातों से अब्बू फिर उलझन में पड़ गए।

शेखू अम्मी की बात सुनता रहा। अब्बू कुछ बोलते उनसे पहले ही वह बोल उठा– "अम्मी, जिब्बू अब मेरे बाल नहीं पकड़ पायेगा। हर समय आकर मेरे बाल नोचा करता था। क्यों अब्बू?" अब्बू के पक्ष में बोलकर शेखू ने उन्हें अम्मी की और बातें सुनने से बचा लिया।

अब्बू, शेखू की तरफ हैरत भरी नजरों से देखने लगे। कोई उसके बाल पकड़ नहीं पायेगा, यह फायदा तो उनके दिमाग में भी नहीं आया था और न ही उन्होंने शेखू को बताया था। अब्बू खुश होकर बोले– ''वाह! बिलकुल सही कह रहे हो बेटा!''

गुस्से में लाल पीली हुई अम्मी भी शेखू की बात सुनकर अपनी हँसी नहीं रोक पाई। सबकी बातें सुनकर जिब्बू भी वहाँ आ पहुँचा और अपनी तोतली जुबान में बोला– "तलो ठेलते है भाई।" जिब्बू की तोतली आवाज ने अब्बू और अम्मी के चेहरे पर पुनः मुस्कुराहट ला दी।

सिराज अहमद
लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

रोहित को मिली सजा

हमेशा की तरह बच्चों की क्लास चल रही थी। निर्मला दीदी घूम–घूम कर उन्हें उनका पाठ पढ़ा रही थी। तभी उनकी दृष्टि सलिल पर पड़ी जो फटी–फटी आँखों से आसमान की ओर देख रहा था। ''तुम्हारा ध्यान कहाँ है बेटा, अपना पाठ क्यों नहीं याद कर रहे?'' स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उन्होंने पूछा। ''आप उड़ती चिड़िया की बात कर रही थी न दीदी, तो मैं सोचने लगा कि यदि मैं भी दूर–दूर तक ऊपर उड़ सकता तो... अच्छा दीदी आप उड़कर दिखाओ न।'' एकाएक खड़े होकर वह अपने दोनों हाथ हवा में झुलाते हुए बोला। ''बेटा, केवल पक्षी ही उड़ सकते हैं हम इनसान नहीं, क्योंकि हमारे पंख नहीं होते।'' दीदी ने कहा।

''और जानवर, क्या वे भी नहीं उड़ सकते?'' ''नहीं वे भी नहीं, वे केवल जमीन पर ही भाग या चल सकते हैं या पेड़ों पर उछल–कूद मचा सकते हैं जैसे बन्दर, गिलहरी आदि।'' ''उनकी तो लम्बी–लम्बी पूँछें भी होती हैं न दीदी?'' पीछे बैठे राघव ने पूछा। इससे पहले कि दीदी कुछ कहती सलिल पीठ के नीचे तक अपना हाथ ले गया फिर हैरान होकर बोला– ''लो जी मेरी तो पूँछ भी नहीं है।'' उसके ऐसा कहते ही सारी कक्षा में हँसी की लहर दौड़ गई और कुछ शैतान बच्चे जोर–जोर से चिल्लाने लगे– ''सल्लू बन्दर, बिना पूँछ वाला सल्लू बन्दर।'' यह सुन सलिल की हालत खस्ता हो गई और वह अपनी ढुलकती निक्कर सँभालते हुए वाटर बॉटल में से गटागट पानी पीने लगा। इस बीच उसकी आँखें भी भर आई और नाक भी बहने लगी।

तब निर्मला दीदी ने अपने रूमाल से उसकी नाक और आँखें पोंछते हुए कहा– ''अरे तुम क्या सचमुच में बन्दर हो जो तुम्हारे पूँछ होगी, नहीं न, तुम तो प्यारे से बच्चे हो और सलिल नाम है तुम्हारा। ये बच्चे तो बस यूँ ही छेड़ते रहते हैं तुम्हें।'' इतना कह उसके गुलगुले से गाल थपथपा दिए।

घर लौटकर बच्चों की कापियाँ चैक करते समय उनका ध्यान बार–बार सलिल की ओर चला जाता। मोटे थुलथुले शरीर का सलिल अन्य बच्चों की तुलना में बहुत सीधा था। तभी तो उसके हाव–भाव और भोलेपन को देखकर अन्य बच्चे उसे कभी सल्लू तो कभी मोटा भालू कहकर बुलाते और बात बेबात परेशान करते रहते जिनमें रोहित सबसे आगे था। बच्चों की भी अपनी निराली दुनिया होती है। मगर दीदी की सदा यही कोशिश रहती है कि वह ऐसे बच्चों को दुःखी न होने दें। यही बात वह सलिल के सहपाठियों से भी कहती कि हर इनसान में कोई न कोई कमी होती है जिसे नकारते हुए उसकी अच्छाइयों पर ध्यान देना चाहिए और सलिल जैसे सरल स्वभाव वाले बच्चे को परेशान करने की अपेक्षा हर काम में उसकी मदद करनी चाहिए। पर यह बात रोहित के गले से नीचे नहीं उतर रही थी।

उस दिन निर्मला दीदी की बेटी श्वेता का जन्मदिन था। शाम के पाँच बजते ही सभी बच्चे सज–धज कर उसे बधाई देने पहुँच गए। दीदी देर तक उन्हें तरह–तरह के खेल खिलाती रही। घर के आँगन में ही आयोजन था। पहले केक काटा गया। इसके बाद कई तरह के स्वादिष्ट व्यंजन बच्चों को परोसे गए। तभी सबकी नजर बचाते हुए रोहित ने सलिल को जोर का धक्का दे दिया, जिससे वह तो गिरते–गिरते बच गया पर हाथ में पकड़ी कीमती प्लेट फर्श पर गिरने से टूट गई। यह देख वह घबराकर रोने

लगा। ''तुमसे कोई भी काम ढंग से होता है कि नहीं, बुद्धू कहीं का। इतनी सुन्दर प्लेट तोड़ दी। अब पड़ेगी डाँट बच्चू को।'' उसकी पीठ पर एक धौल जमाते हुए रोहित ने कहा।

किन्तु उसकी सोच के विपरीत पास आ खड़ी हुई दीदी ने सलिल के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– ''कोई बात नहीं बेटा, कभी–कभी हो जाता है ऐसा। प्लेट ही तो थी और आ जाएगी। चलो मैं तुम्हें दूसरी प्लेट में चीजें परोस कर देती हूँ। आराम से बैठकर खाओ।'' पर सलिल सामान्य नहीं हो सका और बार–बार घर जाने की जिद करने लगा। तब दीदी ने घर के नौकर शम्भू के साथ उसे उसके घर भेज दिया।

अपराध बोध से ग्रस्त हुआ वह अगले दिन भी सहमा–सहमा सा कक्षा में बैठा था कि दीदी की आवाज सुन चौंका। वह सभी बच्चों को सम्बोधित करते हुए उनसे पूछ रही थी कि– ''हमारे घर के बरामदे की दीवार को चॉक और कोयले की लकीरें खींच–खींच कर किसने गन्दा किया है? पहले तो दीवार साफ थी फिर उसे खराब करने की हिम्मत किसने की ? खैर जिसने भी यह काम किया है उसे सजा तो मिलेगी ही।'',

उनकी बात सुन सारी कक्षा में सन्नाटा छा गया। तभी रोहित ने कहा– ''दीदी, सलिल ने किया होगा यह काम। एक वही तो है मूर्ख, पूरी कक्षा में।'' पर दीदी ने उसकी बातों पर ध्यान न देते हुए पुनः अपना प्रश्न दोहराया। ''चलो कोई बात नहीं जो हुआ सो हुआ। पर एक बात तो है, जिसने भी यह चित्रकारी की है, वह सुन्दर है। क्या तुमने की है?'' उनकी अँगुली पुरु पर जाकर टिक गई। ''नहीं दीदी!'' वह धीरे से बोला। तब उन्होंने एक–एक की ओर अँगुली घुमाते हुए रोहित पर स्थिर कर दी। ''तो तुम हो वह छिपे रुस्तम।'' ''जी मैं, पर आप ऐसा कैसे कह सकती हैं?'' रोहित हैरान था।

''कह तो नहीं सकती पर दिखा अवश्य सकती हूँ।'' दीदी ने मुसकुराते हुए कहा और अपने मोबाइल में हुई सी.सी.टी.वी. की रिकार्डिंग सब बच्चों को दिखा दी। सबने देखा श्वेता के जन्मदिन वाले दिन ही रोहित ने सबकी नजर बचाते हुए दीवार पर जल्दी–जल्दी एक चित्र बनाया, फिर हँसते–खेलते अन्य बच्चों के बीच जा बैठा क्योंकि वह सलिल से बहुत चिढ़ता था। इसलिए मन में हर समय उसी का ध्यान बने रहने के कारण अनजाने में उसने उसी से मिलती–जुलती आकृति दीवार पर उकेर दी थी। यह

रास्ता बताइए

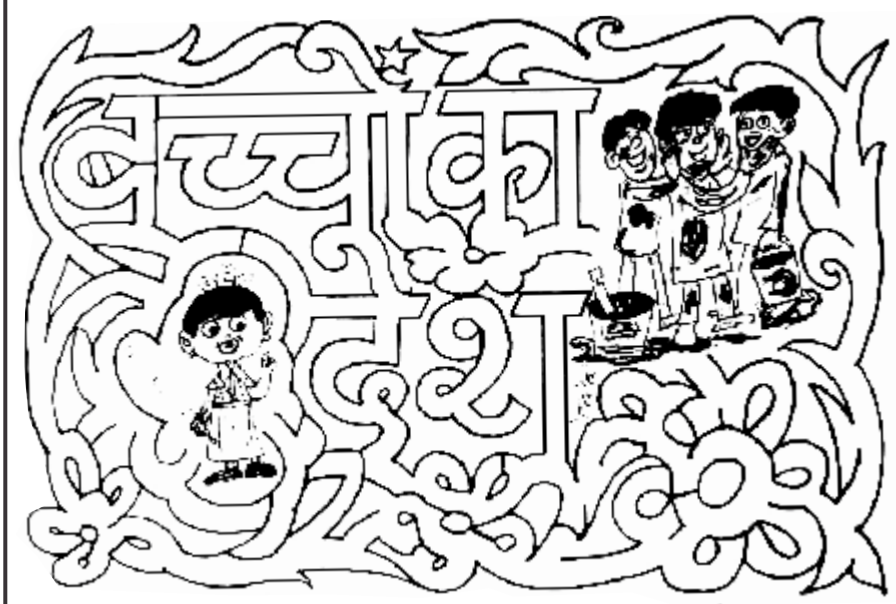

बच्चों का देश उद्यान में तीन मित्र होली खेल रहें हैं। कृष्णा कुमारी भी उनके संग होली खेलना चाहती है लेकिन रास्ता कठिन है। आप सही रास्ते से कृष्णा को मित्रों के पास पहुँचाइए।

चाँद मोहम्मद घोसी
मेड़ता सिटी (राजस्थान)

बात निर्मला दीदी अच्छी तरह समझ चुकी थी। रोहित घर में सी.सी.टी.वी. लगे होने की बात से पूरी तरह अनजान था फलस्वरूप पोल खुल जाने की बात को लेकर बुरी तरह घबरा गया।

निर्मला दीदी कुछ क्षण उसके मनोभावों को पढ़ते हुए चुप बैठी रहीं फिर उसके सिर पर हाथ फेरते हुए स्नेहपूर्वक बोली– ''बेटा रोहित, यह चित्र बनाकर तो तुमने यह साबित कर दिया कि तुम बहुत अच्छी चित्रकारी कर सकते हो, पर इसके लिए ड्राइंग पेपर का प्रयोग करो घर की दीवारों का नहीं। अब रही तुम्हारी सजा की बात तो इस दीवाली पर तुम अन्य सभी बच्चों के साथ मिलकर दीवाली कार्ड बनाओगे और एक सुन्दर सा कार्ड मेरे लिए भी।'' बिना उसे डाँटे फटकारे एक सुखद शुरूआत की कामना करते हुए दीदी ने कहा।

फिर सलिल से बोली– ''देखो सलिल, तुम्हें रोहित से डरने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह तो तुमसे बहुत प्यार करता है। तभी तो तुम्हारा ही चित्र बनाया है उसने दीवार पर किसी दूसरे का नहीं। इसलिए आज से तुम दोनों दोस्त हुए। क्यों रोहित, ठीक है न।'' ''जी दीदी!'' लज्जित हुआ रोहित बोला और स्वयं में सुधार लाने की बात सोच सलिल की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ा दिया।

सुकीर्ति भटनागर
पटियाला (पंजाब)

आओ पढ़ें : नई किताबें

वरिष्ठ साहित्यकार अश्वनीकुमार पाठक का यह सातवाँ बाल कविता संग्रह है जिसमें सूरज, धूप, फूल, बादल, पशु पक्षी, मौसम, त्योहार जैसे रुचिकर विषयों पर 40 कविताएँ एवं बालगीत एक गुलदस्ते की तरह सजे हुए हैं। इन कविताओं में सरल, सहज भाषा द्वारा संदेश प्रदान करने की क्षमता है। सभी कविताएँ तुकान्त, लय व गेयता की दृष्टि से उत्तम है। बच्चे विभिन्न आयोजनों में इनकी प्रस्तुति कर सराहना पा सकते हैं। पुस्तक का सुन्दर, सचित्र मुद्रण संतोषप्रद है।

पुस्तक का नाम : फूल और पत्ते
मूल्य : 125 रुपए
प्रकाशक : नमन प्रकाशन, दिल्ली

लेखक : अश्वनी कुमार पाठक
पृष्ठ : 78
संस्करण : 2021

आओ! इस बार एक बाल उपन्यास की बात करते हैं जिसमें 8 वर्षीय बालक वीर, बोलने वाली सुन्दर चिड़िया, रंगीली और बुलेट नाम का छोटा सा कुत्ता मुख्य पात्र है। इनके माध्यम से एक प्राकृतिक एवं आधुनिक गाँव की सैर का वर्णन है। बालक वीर, बातूनी पेड़, ड्रेगन, फ्लाई से संवाद, गाँव का मेला, खेती बाड़ी, गोबर गैस प्लांट, व्यायामशाला, उड़ने वाला मेढक जैसे अनेक जाने–अनजाने पात्रों से मिलता है। उनकी मजेदार ज्ञानवर्द्धक बातों से भरी समीर गांगुली की यह नई पुस्तक है। एक बार हाथ में आ गई तो सुन्दर चित्रों से सजी इस पुस्तक को आप पढ़कर ही छोड़ेंगे। रोचकता, विविधता व कल्पनाशीलता से भरपूर यह बाल उपन्यास कई दिनों तक आपके मन–मस्तिष्क में घूमता रहेगा।

पुस्तक : रंगीन, बुलेट और वीर
मूल्य : 110 रुपए
प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली

लेखक : समीर गांगुली
पृष्ठ : 52
संस्करण : 2021

WORLD
WILDLIFE DAY
3 MARCH

संतुलित पर्यावरण

जब हम किसी प्राकृतिक स्थान पर भ्रमण के लिए जाते हैं तो वहाँ हरे–भरे ऊँचे पर्वत, कलकल बहती नदियाँ, निर्मल जल के झरने एवं घने जंगल के बीच विविध रंग–बिरंगे पक्षी, स्वच्छंद विचरण करते वन्यजीवों को देखकर हमारा हृदय पुलकित हो उठता है। क्या आप जानते हैं कि विश्व में वन और वन्यजीवों की संख्या में प्रतिवर्ष निरन्तर कमी हो रही है जो संतुलित पर्यावरण के लिए एक चिन्ताजनक पहलू है।

इसी आधार पर 20 दिसम्बर, 2013 को संयुक्त राष्ट्र संघ के 68 वें अधिवेशन में थाइलैंड ने यह प्रस्ताव रखा कि वन्य पेड़ पौधों (flora) एवं जीव–जन्तुओं (fauna) के संरक्षण एवं संवर्धन के बारे में जनजागृति पैदा करने के उद्देश्य से हमें प्रतिवर्ष एक आयोजन रखना चाहिये। तब तय हुआ कि प्रतिवर्ष 3 मार्च को वन्य जीव दिवस मनाया जाएगा क्योंकि वर्ष 1973 में 3 मार्च को ही जीवों की संकटग्रस्त प्रजातियों को संरक्षित करने हेतु एक अन्तरराष्ट्रीय संधि हुई थी जिसे CITES कहा जाता है। इसका पूरा तात्पर्य 'संकटग्रस्त वन्य जीव जन्तुओं एवं पेड़ पौधों के अन्तरराष्ट्रीय व्यापार हेतु सन्धि' है।

साईट्स विश्व का सबसे पुराना एवं सबसे बड़ा संधि संगठन है। इसकी सदस्यता स्वैच्छिक है। सन्धि में वर्णित सभी शर्तों को मानना एवं उनके अनुसार संरक्षण के प्रयास करना हर सदस्य की नैतिक जिम्मेदारी होती है। सदस्य देश सन्धि के दिशा निर्देशों की पालना हेतु अपने–अपने देश में कानून बनाकर उसे लागू करवाने हेतु प्रयास करते हैं ताकि एक देश की वन्य प्रजातियों को अथवा किसी भी वन्य जीव के भाग को (खाल, फर, चिड़ियाँ की जातियाँ, पेड़ों की पत्तियाँ व छाल) दूसरे देश में ले जाने/लाने, उपयोग करने पर रोक लगाकर वन्य प्राणियों की रक्षा की जावें।

जैव विविधता BIO DIVERSITY

हम देखते हैं कि हमारे चारों ओर पेड़ पौधों और जीव जंतुओं के असंख्य विविध प्रकार पाए जाते हैं। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि धरती पर जीवों की 87 लाख और समुद्री क्षेत्रों में करीब 22 लाख प्रजातियाँ पाई जाती है। चिंता का विषय है कि यह संख्या निरन्तर कम होती जा रही है।

विलुप्त प्रजातियाँ

वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी पर प्रतिदिन 3 प्रजातियाँ विलुप्त(extint) हो रही है। मॉरीशस का डोडो पक्षी, अफ्रीकन काला राइनो, पैसेंजर पिजन, वुली मेमोथ (एक प्रकार का हाथी) केस्पीयन टाइगर जैसी प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी है। प्रजातियों में उपस्थित जीन एक खजाना है जिसका उपयोग मानव कल्याण हेतु किया जा सकता है। अतः हमारा प्रयास उन्हें विलुप्त होने से बचाने का होना चाहिये।

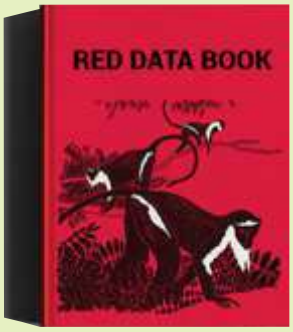

आई.यू.सी.एन. संगठन ने पूरे विश्व स्तर की विलुप्त होने वाली प्रजातियों की एक सूची तैयार की है जिसे रेड लिस्ट या लाल सूची कहा जाता है। यह सूची जिस पुस्तक में अंकित की जाती है, उसे रेड डेटा बुक कहते हैं। इन्होंने स्तनपायी, पक्षी, सरीसृप,

के लिए जरूरी है वन्य जीव

वन्य जीवों के संरक्षण हेतु विश्व स्तर पर प्रयासरत प्रमुख संस्थाएँ

World Wide Funds For Nature (WWF)
विश्व प्रकृति निधि

विश्व की सबसे बड़ी इस अन्तरराष्ट्रीय संस्था का कार्य वन्य प्राणियों की सुरक्षा, संरक्षण एवं पर्यावरण पर हो रहे मानवीय प्रभावों को कम करना है। यह संस्था 100 से अधिक देशों में 3000 से अधिक परियोजना में कार्य कर रही है।

International Union For Conservation of Nature
प्रकृति संरक्षण हेतु अन्तरराष्ट्रीय संगठन

इस संगठन के सदस्य सरकारें तथा सिविल सोसायटी की संस्थाएँ भी है। इसका मुख्यालय इंग्लैंड में है। इनका कार्य अनुभवी लोगों के साथ संसाधनों के टिकाऊ विकास हेतु विश्व स्तरीय कार्यों को सफलता पूर्वक करना है।

उभयचर, मछलियों, कीटों, मोलस्क एवं पादपों को संकट के आधार पर तीन श्रेणियों में बाँटा गया – (1) गंभीर रूप से संकटग्रस्त (2) संकटग्रस्त (3) संवेदनशील।

भारत सरकार के ''वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन'' मंत्रालय द्वारा भी भारत की रेड डेटा बुक तैयार की गयी है जिसमें प्रमुख रूप से स्थानीय जातियों के बारे में सूचनाएँ हैं। इसके अनुसार हमारे देश में गंभीर रूप से संकटग्रस्त प्रजातियों में कोंडाना चूहा, मलाबार सीवेट, काश्मीरी मृग, नदी की डॉल्फिन, पीकॉक टाराटुला, गंगा नदी की शार्क, पांडिचेरी शार्क, घडियाल, टोड जैसी चमड़ी वाला मेढक आदि सम्मिलित है। भारतीय जंगली भैंसा (जेबू कैटल), गुलाबी सिर वाली बत्तख एवं भारतीय चीता जैसी प्रजातियाँ भारतवर्ष से विलुप्त हो गई है।

अब आवश्यक है कि हम विश्व के समस्त नागरिक मिलकर प्राकृतिक सम्पदा की सुरक्षा एवं संरक्षण में योगदान दें।

हमारा कर्तव्य

- हम वन्य प्राणियों को छेड़े नहीं उन्हें शान्ति पूर्वक दूर से देखें और उनके बारे में जानकारी प्राप्त करें।
- वन्यजीवों को न छुएँ, वे हमें चोट पहुँचा सकते हैं।
- घायल वन्य प्राणियों की सहायता करने की कोशिश नहीं करें। बल्कि वन अधिकारियों को सूचित करें।
- इन जीवों के बच्चों को गोद में लेने की चेष्टा न करें। इनके माता–पिता छुप कर हमें देख रहे होते हैं। वे हमें नुकसान पहुँचा सकते हैं।
- इन जीवों को भोजन नहीं देवें।
- यदि वन भ्रमण करते हुए हमें कोई व्यक्ति शिकार करने की नियत से दिखाई दे तो उसकी सूचना वन विभाग को दें।

सार की बात यह है कि हम ऐसा कोई कार्य नहीं करें जिससे जीव–जन्तुओं, पेड़–पौधों को नुकसान पहुँचे या उनके प्राणों का खतरा हो। हमारी जीवन–शैली प्रकृति मित्र जैसी (इको फ्रेंडली) हो तो हम एक सुनहरे भविष्य की निश्चित रूप से कल्पना कर सकते हैं।

डॉ. आर.के. गर्ग
उदयपुर (राजस्थान)

धन्यवाद देने से मिलती है खुशी

प्यारे बच्चो!

आज हम बात करेंगे 'धन्यवाद' शब्द की। आपने पहले भी इस शब्द को सुना होगा और प्रयोग भी किया होगा। जब दैनिक जीवन में कोई भी हमारी मदद करता है, भले ही वे हमारे परिवार के सदस्य हो या फिर हमारे मित्र या फिर कोई और, तो हम उन्हें धन्यवाद करते ही हैं।

मगर बच्चो! क्या कभी आपने सोचा है कि बहुत बार कुछ लोग हमारी मदद अप्रत्यक्ष रूप से भी करते हैं अर्थात् किसी ऐसे व्यक्ति का योगदान भी होता है, जिसे न तो हमने कभी देखा है और न ही हम जानते हैं, पर उस व्यक्ति की मदद के बिना हमारा कार्य सम्भव नहीं हो पाता। चलिए इस बात को समझने के लिए एक उदाहरण लेते हैं।

आप सभी रोज खाने में रोटी खाते हैं। यह रोटी कहाँ से आती है? सबसे पहले आपकी माँ घर पर आटे से रोटी बनाती है, तो आप तक रोटी माँ ने पहुँचाई।

इसी तरह हम कुछ और कदम पीछे जाएँ। अब सोचिए कि यह आटा कहाँ से आया होगा ? जरूर यह आटा किसी दुकानदार के यहाँ से आया होगा, उस दुकानदार ने इस आटे को कितने समय तक सँभाल कर रखा होगा, ताकि यह खराब न हो जाए और दुकानदार के पास यह कहाँ से आया होगा ? यह आटा पहले गेहूँ था और वह गेहूँ किसी किसान के खेत में पैदा हुआ होगा।

किसान के फसल उगाते समय वातावरण जैसे कि धूप, पानी, मिट्टी, बीज आदि ने गेहूँ को उगने में सहायता की होगी और उसके बाद किसान ने फसल को तैयार करके काटा होगा, उसके बाद उसने गेहूँ को बाजार में पहुँचाया होगा और उसके बाद वह गेहूँ आटे का रूप लेकर आपके घर तक पहुँचा है। तो आपने देखा कि जो रोटी आप रोज बहुत ही साधारण समझकर अपने खाने में लेते हैं, उस एक रोटी को आपकी थाली तक लाने में कितने ही लोगों का योगदान होता है।

बच्चो! यह सब आपको इसीलिए बताना जरूरी है ताकि खाना खाने से पहले आप दो मिनट उन लोगों का भी धन्यवाद कहें और उन्हें दिल से याद करें जिन लोगों ने आपकी थाली तक रोटी पहुँचाने में इतना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। यदि आप मन ही मन उनको धन्यवाद देंगे तो आपको बहुत अच्छा लगेगा और आप एक आंतरिक खुशी महसूस करेंगे।

हो सकता है, आपको यह बात साधारण लगे, पर हमें इस बात का एहसास होना चाहिए कि हमारे बहुत से काम ऐसे होते हैं, जिनमें न जाने कितने ही लोगों का सहयोग छिपा रहता है, ऐसे में बहुत जरूरी है कि हम उनके प्रति सम्मान व्यक्त करें और दिल से उन्हें धन्यवाद करें। आप इस 'धन्यवाद' कहने की प्रक्रिया को धीरे–धीरे अपनाएँ और देखें कि आपके अन्दर खुशी की एक अलग ही लहर प्रवाहित होगी जो आपको सदा आनन्दित और खुशहाल रखेगी। धन्यवाद।

नेहा गुप्ता
दिल्ली

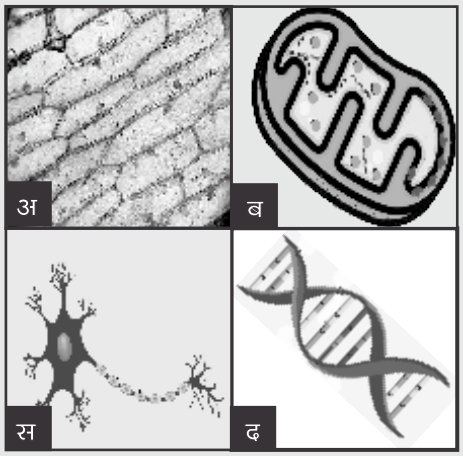

दस सवाल दस जवाब

(1) ऊपर दिये गये चित्रों को पहचानिये।

(2) कोशिका के अध्ययन का विज्ञान क्या कहलाता है ?

(3) सर्वप्रथम कोशिका (cell) की खोज किसने की ?

(4) किस कोशिकांग को 'आत्मघाती थैली' कहा जाता है ?

(5) मानव कोशिका के केन्द्रक में कितने गुणसूत्र होते हैं ?

(6) शरीर में नई कोशिका का जन्म कैसे होता है ?

(7) समान आकार व कार्य करने वाले कोशिका के समूह को क्या कहते है ?

(8) सबसे बड़ी कोशिका किसे माना जाता है ?

(9) किस कोशिकांग की उपस्थिति से पादप कोशिका में हरा रंग होता है ?

(10) स्तनधारियों की किस कोशिका में केन्द्रक नहीं पाया जाता ?

उत्तर इसी अंक में

जरा हँस लो

- कंजूस सेठ (टेलर से) : क्यों भाई, पेंट की सिलाई का क्या लोगे?
  टेलर : सिर्फ 90 रुपए।
  सेठ : अच्छा निकर की सिलाई?
  टेलर : सिर्फ 35 रुपए।
  सेठ : अच्छा! तो मेरी 40 इंच लम्बी निकर सिल दो।

- एक सेठ (दूसरे से) : मुझे लखपति बनाने का सारा श्रेय मेरी पत्नी को है।
  दूसरा सेठ (हैरानी से) : अच्छा! आप पहले क्या थे ?
  पहला सेठ : जी, करोड़पति।

प्रेरक वचन

समस्या से मुक्त वही हो सकता है, जो उसका सामना करना जानता है।

❖

सफलता का सूत्र है– संकल्पशक्ति का विकास। पहले लक्ष्य की कल्पना करो फिर उसे एकाग्रता से पूर्ण करो। संकल्प शक्ति का विकास होगा।

❖

अहिंसा वह अमृत है, जो समाज व राष्ट्र को जीवित रखता है।

❖

सद्वाक्य दरवाजों पर लिखने से नहीं, हृदय में उतारने से कल्याण होगा।

❖

अपनी योग्यता का विकास करो। अपनी क्षमता बढ़ेगी, सब अपने हो जायेंगे।

❖

कल से आज अच्छा बने, आने वाला कल और अधिक अच्छा, यह संकल्प से सम्भव है।

आचार्य महाप्रज्ञ

खाओ खाओ

नानी मेरी यूँ तो अच्छी
हर नानी–सी प्यारी भी हैं।
पर हमको लगती हैं जैसे
वे थोड़ी–सी न्यारी भी हैं।

जब हम जाते उनके घर पर
गले लगाकर कहतीं आओ।
लेकिन जब तक रहते हैं हम
कहती रहती खाओ–खाओ।

खाओ–खाओ सुनते–सुनते
मत पूछो कैसा लगता है!
ना ना ना ना करते–करते
मुँह अपना दुःखने लगता है।

दिविक रमेश
नोएडा (उत्तरप्रदेश)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

हू–पो या हू–पो–पो डोरथी हुदहुद चिल्लाया। वह लगातार 5 मिनट तक ऐसे ही आसमान में उड़ता हुआ चिल्लाता रहा। यूँ तो उसकी आवाज सुरीली है। सबको अच्छी लगती है। परन्तु आज उसकी आवाज कुछ अलग तरह से निकल रही है। मानो चेतावनी देती हुई सबको सावधान कर रही है। समुद्र की लहरें ऊँची उठने लगी। तूफान की सम्भावना लिये ऊँची लहरों को देख उसने चिल्लाते हुए पेड़ पर बैठी शफी हुदहुद को सतर्क किया– "शफी शफी, हू पो। सुन रही हो शफी, तूफान आने वाला है। समुद्र से उठी ऊँची–ऊँची लहरें तूफान बन कर तेजी से यहाँ पहुँचने ही वाली है।"

सफेद काली जेब्रा धारियों वाली भूरे रंग के हुदहुद पक्षी का चिल्लाना जारी था। यह एक घना जंगल है। डोरथी हुदहुद उड़–उड़ कर सभी को चेतावनी दे रहा है। समुद्री तूफान आने वाला है। समुद्री तूफान आने वाला है। उत्तरी हिन्द महासागर की ऊँची लहरें उछलकर आगे बढ़ती जा रही है।

तूफान से बड़ी ममता

"तूफान? कोई रोके उसे? तूफान को कोई रोक क्यों नहीं रहा है?" मोर ने पूछा। बंदर ने पूछा। सबने पूछा, पर दूर उस पुराने कोटर में शफी अपने में ही खोई हुई थी। शफी हुदहुद कोटर के भीतर बने घोंसले में रखे अपने अंडों को सहला रही है। डोरथी की चेतावनी से बेखबर शफी अंडों को अपने पंखों से प्यार कर रही है। वह कभी अपनी तीखी लम्बी, चिमटे जैसी चोंच से उन्हें छूती है। तो कभी चोंच से घोंसले में बिखरे तिनकों को उधर इधर रखती है।

दूर से ही उसने डोरथी को कहा– "देखो तो कितने प्यारे लग रहे हैं मेरे अंडे। पीले–पीले हल्के भूरे रंग के। अभी तो यह दो ही है। तुम्हें पता है अब मैं 3 और अंडे दे दूँगी।" शफी ने अपने सिर की कलगी को फैलाया। सुन्दर, धारीदार कलगी सिर पर मुकुट की तरह लगने लगी। शफी हुदहुद की कलगी को देखकर डोरथी हुदहुद ने भी अपने सिर की कलगी को फैलाया और शफी से कहा– "शफी, समुद्री तूफान लगातार आगे बढ़ रहा है। यह तूफान सबको उजाड़ देगा। घरों को तबाह कर देगा। इस पुराने पेड़ को उखाड़ फेंके इससे पहले आओ हम यहाँ से दूर चले जाएँ।"

"मैं अपने अंडे में से बच्चे निकलते देखूँगी। प्यारे–प्यारे छोटे कोमल पंख वाले मेरे बच्चे।" "शफी तुम समझ क्यों नहीं रही हो? महासागर से उठा तूफान बहुत आगे बढ़ चुका है। जल्दी ही वह यहाँ भी पहँच जाएगा।" "पहले तुम मेरी सुनो।" शफी हुदहुद ने आगे कहा– "डोरथी, मैं ऐसी जगह जानती हूँ जहाँ जमीन में कीड़े दबे हुए हैं। जब मैं बच्चों की देखभाल करूँगी तुम कीड़े ढूँढ़–ढूँढ़ कर उनके लिए भोजन लेकर आओगे। या हू हुप्प।" डोरथी चिल्लाया।

आने वाले तूफान की भयावहता बताते हुए फिर से कहने लगा– "अभी मैं देख सुनकर आ रहा हूँ। लाखों लोग घर छोड़कर जा चुके हैं। अंडों को छोड़ो। हमें यहाँ से दूर जाना होगा। नहीं तो हम तूफान में घिर जाएँगे।"

"क्या कहा, अपना घोंसला अपने अंडे छोड़कर कहीं चली जाऊँ?" "जाना तो होगा ही हम लोग समूह में नहीं रहते हैं। जो करना है हमें अकेले ही करना होगा। हमें इस समुद्री तूफान से बचाने वाला

कोई नहीं है। समुद्री तूफान में अगर घिर गए तो चारों ओर पानी ही पानी होगा। कहीं बैठने को जगह नहीं होगी। खाने के लिए कुछ भी नहीं होगा। आओ हम तूफान की चपेट में आ जाय और हमारा जीवन समाप्त हो जाय उससे पहले यहाँ से निकल चलें।"

"नहीं–नहीं डोरथी, मैं अपने अंडों को छोड़ कर के नहीं आऊँगी। मैं अपनी गर्मी उन्हें दूँगी। अपने पंखों की गर्मी से कोशिश करती हूँ कि बच्चे जल्दी बाहर आ जाए। एक अंडे को तुम अपनी गर्मी दो। गर्मी पाकर बच्चे बाहर आ जाएँगे। हम अपने बच्चों को साथ में लेकर यहाँ से उड़ जाएँगे और दूर चले जाएँगे। जहाँ कोई तूफान उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगा। आओ, डोरथी घोंसले में आ जाओ। हम दोनों मिलकर एक एक अंडा सेते हैं।" डोरथी जानता था कि शफी अपने बच्चों को बहुत प्यार करने वाली चिड़िया है। शफी की बात सुनकर डोरथी कोटर में घुस कर एक अंडे पर बैठ गया और अंडे को अपने पंखों से ढककर गर्मी देने लगा।

हवा आँधी तेज–तेज चलने लगी। पेड़ की डालियाँ झुकझुक कर लहराने लगी। जैसे टूटी, कि अभी टूटी। डोरथी को डर लग रहा है किन्तु शफी को कोई डर नहीं। उसके चेहरे पर आनन्द है। आँखों में प्रेम है अपने बच्चों के लिए। कुछ ही देर में अंडे तड़क गए और उसमें से दो नन्हे–नन्हे हुदहुद के बच्चे निकल आये। जोर की हवा चली पेड़ की डाली झुक गई।

शफी की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। शफी ने कहा– "डोरथी तूफान आए, इससे पहले ही आओ, अपने बच्चों को पंखों से पकड़कर यहाँ से उड़ चले। किसी सुरक्षित जगह की ओर ले जाए ताकि वह अपना जीवन जी सकें।

''हू–पो, या हू–पो–पो'' शफी भी डोरथी हुदहुद के साथ चिल्लायी। यह सुरीली आवाज उनकी खुशी की थी। उन्होंने अपने पंजों में दोनों चूजों को सावधानी से उठा लिया। दोनों ही ऊँचे उड़ चले आसमान में। उनके इस हौसले को देखकर वैज्ञानिकों ने उस समुद्री तूफान का नाम रखा हुद हुद। हुदहुद पक्षी की तरह तूफान से मुकाबला करें ताकि शांति से तूफान बिना नुकसान किए गुजर जाए।

विमला भंडारी
सलूम्बर (राजस्थान)

रंग भरो

होली खेलते बच्चों के इस चित्र में रंग भरकर हमें व्हाट्सएप पर भेजें। चयनित चित्र प्रकाशित होंगे।

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

व्हाट्सएप कहानी

एक व्यक्ति रास्ते पर पैदल चलता हुआ जा रहा था। इतने में उसकी नजर सड़क के किनारे एक पत्थर के नीचे रखे रंगीन कागज पर पड़ी। उसने कागज उठाया और पढ़ने लगा।

उस पर लिखा था– ''बेटा, मैं एक 80 साल की बुढ़िया हूँ। मेरी नजर भी बहुत कमजोर है। मैं पास में ही एक मकान में रहती हूँ। मेरा आज 50 का एक नोट इस सड़क पर कहीं खो गया। यदि तुम्हें मिले तो मुझे पहुँचाना, वह मेरे लिए बहुत मददगार होगा। मैं तुम्हारा एहसान मानूँगी और भगवान से तुम्हारे भले के लिए प्रार्थना करूँगी।'' उस कागज के नीचे एक पता दिया हुआ था।

उस सज्जन ने सोचा– मुझे इस पते पर चलकर देखना चाहिए। कौन बुढ़िया है? इसी बहाने यदि मैं उसकी मदद कर सकूँ तो अच्छा होगा। वह उस पते की ओर चल पड़ा। कुछ ही दूरी पर उसे वह घर मिल गया। घंटी बजाई, कुछ देर बाद एक बुढ़िया दरवाजे पर आई। व्यक्ति ने कहा– "मांजी, आपका 50 रुपए का नोट खो गया था। मुझे वह नोट मिला है। आप इसे ले लीजिए।"

बुढ़िया ने कहा– "बेटा! मेरा तो कोई नोट नहीं खोया। सुबह से 10–15 लोग पहले भी यह नोट लौटाने के लिए यहाँ आ चुके हैं। पता नहीं ऐसा क्यों हो रहा है? ऐसा कागज लिख कर किसने रखा, मुझे तो नहीं मालूम।" यह सुनकर वह व्यक्ति अचरज में पड़ गया पर उसने अत्यधिक आग्रह कर वह 50 का नोट उस बुढ़िया को दे दिया। नोट लेते हुए बुढ़िया ने कहा कि– ''बेटा मेरा एक काम करना, तुम वापस उस रास्ते पर जाओ तो वह कागज वहाँ से हटा देना या फाड़ देना।'' व्यक्ति गर्दन हिलाकर हाँ कहते हुए वहाँ से रवाना हो गया।

रास्ते में वह सोचने लगा– उस बुढ़िया की मदद करने के लिए जिस व्यक्ति ने यह अनूठी तरकीब सोची, वह कितना भला और बुद्धिमान इनसान होगा! मैं यदि उस बुढ़िया का कहना मान कर उस कागज को हटा देता हूँ तो बुढ़िया की मदद कौन करेगा? हो सकता है बुढ़िया ने पहले भी आने वाले लोगों से ऐसा ही कहा हो पर अब तक किसी व्यक्ति ने वह कागज नहीं हटाया। लगता है इनसानियत अभी भी जिंदा है और यह सोचते हुए वह सीधा अपने घर लौट गया।

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

	1		8			9		6
4				1	5		3	
	2	9		4		5	1	8
	4					1	2	
			6		2			
	3	2					9	
6	9	3		5		8	7	
	5		4	8				1
					3			

उत्तर इसी अंक में

ढाक के तीन पात

बच्चो! हरे पत्तों से बने पत्तल दोने में दावत खाने में बहुत मजा आता है। इससे प्रदूषण भी नहीं फैलता। ये कुछ समय में सूख कर मिट्टी में मिल जाते हैं। ये पत्तल दोने मेरी पत्तियों से बनाए जाते हैं।

मेरा नाम पलाश है। मैं एक बहुवर्षीय वृक्ष हूँ। मुझे ढाक और टेसू के नाम से भी जाना जाता है। मैं भारत के सभी प्रदेशों और स्थानों में पाया जाता हूँ। मेरा वृक्ष बहुत ऊँचा नहीं होता है। मुझे मालूम है, तुम्हें दादी, नानी और मम्मी अलग–अलग नाम से बुलाते हैं। उसी तरह मेरे भी बहुत सारे नाम हैं। गुजराती में मुझे खाखरी, पंजाबी में केशु, बांग्ला में पलाश और संस्कृत में किंशुक नाम से जाना जाता हैं। मेरा वैज्ञानिक नाम है 'ब्यूटिया मोनोस्पर्मा'।

मेरा वृक्ष तीन रूपों में पाया जाता हैं। मैं बगीचों में वृक्ष रूप में, जंगल और पहाड़ों पर झाड़ियों के रूप में होता हूँ। लता रूप में बहुत कम पाया जाता हूँ। जैसे तुम्हारे शरीर पर हाथ, पैर, सिर, आँख, नाक, कान कई अंग होते हैं। वैसे ही मेरे वृक्ष के प्रमुख अंग है– जड़, तना, पत्तियाँ, फूल, फलियाँ तथा बीज। मेरे पत्ते आगे से गोल, पतले, चिकने, मजबूत और त्रिकोणाकार होते हैं। मेरी पत्तियों का रंग पीठ की ओर हल्का हरा और सामने की ओर गहरा हरा होता हैं। मेरी एक टहनी पर तीन पत्ते होते हैं। इसीलिए मुझ से जुड़ा हिंदी का मुहावरा है 'ढाक के तीन पात'।

मेरे वृक्ष पर फागुन के अन्त और चैत के आरम्भ में फूल लगते हैं। मेरा मतलब वसन्त ऋतु में मुझ पर फूल खिलते हैं। उस समय मेरे सारे पत्ते झड़ जाते हैं और मैं फूलों से लद जाता हूँ। मेरे लाल–नारंगी फूल दिखने में बहुत ही आकर्षक होते हैं। पत्तियाँ के बिना तने व डालियों पर समूह में खिलते हैं। मेरे इसी सौंदर्य के कारण मुझे 'जंगल की आग' की उपमा भी दी गई हैं।

मेरी कलियाँ काले भूरे रंग की घनी और मखमली होती हैं। कलियाँ पूरी तरह खिलने के बाद लाल नारंगी रंग के एक छत्र के रूप में पूरे पेड़ को ढक लेती हैं। लाल फूलों से मेरा रूप अति सुन्दर दिखाई पड़ता है। तुम्हें बताते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मेरे इस सुन्दर रूप से ही साहित्य में शृंगार रस के साथ मेरा वर्णन हुआ है।

आप सोच रहे होंगे कि यह पेड़ अपनी तारीफ ही किए जा रहा है। इसमें कुछ गुण भी है या नहीं। तो सुनो, मेरे फूलों को पीसकर चेहरे पर लगाने से चमक बढ़ती हैं। लूँ नहीं लगती, गर्मी का एहसास नहीं होता। मेरे फूलों को उबाल कर एक प्रकार की ललाई लिए हुए पीला रंग भी निकलता है जिसे होली के अवसर पर प्राचीन काल से ही रंग खेलने के लिए काम में लिया जाता है। मेरा फूल उत्तर प्रदेश का राज्य पुष्प है। मुझे भारतीय डाक तार विभाग ने डाक टिकट पर प्रकाशित कर सम्मानित किया। मुझे तब बहुत खुशी हुई थी। बिलकुल वैसे ही जैसे तुम्हें जब कोई पदक मिलने से होती हैं।

कुछ दिनों बाद फूल के झड़ने पर चौड़ी–चौड़ी फलियाँ लगती है। जिनमें गोल और चपटे बीज होते हैं। मेरी इन फलियों को 'पलास पापड़ा' और बीजों को 'पलास बीज' कहते हैं। मेरे फूल और बीज औषधि के रूप में काम में आते हैं। रोगी को राहत देकर मुझे बहुत सुकून मिलता हैं। क्या आप जानते हो, मेरी फलियों की छाल से एक विशेष प्रकार का रेशा निकलता है। जिसको जहाज के पटरों की दरारों में भरकर, भीतर पानी आने से रोका जाता हैं। मेरी जड़ की छाल से जो रेशा निकलता है, उससे रस्सी, दरी और कागज भी बनाया जाता हैं।

मेरी पतली डालियों को उबालकर एक प्रकार का कत्था तैयार किया जाता हैं। जिसे बंगाल में अधिक खाया जाता हैं। मगर मुझे अच्छा नहीं

देखें पृष्ठ 36...

कविता का अर्थ

बाजार और घर में होली की बड़ी रौनक थी, दुकानें रंग–बिरंगे अबीर से सजी हुई थी। लाल, पीले, हरे, नीले रंग के अबीर कितने खूबसूरत थे। हर तरफ भीड़ ही भीड़ ऐसा लगता था कि पूरा शहर ही उमड़ आया हो। कोरोना का प्रकोप अभी पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ था। घरों से निकलना कही न कहीं मजबूरी भी थी, आखिर इतना बड़ा त्योहार जो है। लोग मास्क लगाए बाजार में घूम रहे थे।

मिठाई की दुकान, कपड़े की दुकान हर जगह सिर्फ सर ही सर थे... अबीर और गुलाल के छोटे–छोटे पहाड़ बने हुए थे। छोटी–बड़ी पिचकारियाँ दुकानों में सजी हुई थी। बबलू यह सब देखकर बहुत खुश हो रहा था। मम्मी थोड़ी–थोड़ी देर पर सेनेटाइजर से अपना और बबलू का हाथ साफ करवा देती थी। पापा ने बबलू की अँगुली कसकर पकड़ रखी थी, उन्हें डर था कि नन्हा बबलू भीड़ में कहीं गुम न हो जाये पर बबलू को हमेशा लगता कि अब वह बड़ा हो गया है।

मम्मी ने मिठाई, हर्बल वाले लाल और गुलाबी रंग के अबीर के पैकेट और सजावट का कुछ सामान खरीदा और बबलू ने पापा और मम्मी के साथ नये–नये कपड़े, मिठाइयाँ और ढेर सारे पानी में घोलने वाले रंग खरीदे। बबलू सोच–सोचकर खुश हो रहा था। मुहल्ले के बच्चों के ऊपर कितना अच्छा रूआब पड़ेगा, जब वह अपने रंग की पोटली खोलेगा। खासकर बड़े भैया कल जो बड़ी वाली पिचकारी लेकर आये हैं, उसे देखकर सबकी आँखें फटी की फटी रह जायेगी। उससे पानी कितनी दूर तक जाता है ? सोनू और गोलू तो निश्चित ही डर जायेंगे। बाजार से लौटते–लौटते काफी देर हो गई थी, बबलू काफी थक गया था। मम्मी ने जल्दी–जल्दी कपड़े बदले और बबलू को खाना खिलाया।

"बबलू! कल छोटी होली और परसों बड़ी है... तुम कल ही अपना सारा होमवर्क पूरा कर लेना, वरना बाद में बहुत परेशानी होगी फिर मुझसे मत कहना कि मम्मी ने ठीक से त्योहार भी मनाने नहीं दिया।" बबलू जानता था सारी बातें एक तरफ और पढ़ाई एक तरफ, वैसे भी कोरोना की वजह से उसकी पढ़ाई का कितना नुकसान हो गया था। लापरवाही ठीक नहीं, मम्मी गलत तो नहीं कह रही थी...। "मम्मी! मैं कल सारा होमवर्क पूरा कर लूँगा, आप चिन्ता न करो।"

मम्मी के चेहरे पर एक मुसकान आ गई, बबलू मम्मी से प्रॉमिस करके सो गया। आज छोटी होली थी पूरे घर में पकवान बनने की खुशबू आ रही थी। आज के दिन को एक तरह से बुराई पर अच्छाई के विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

मम्मी सबका कितना ध्यान रखती थी, कोई भी त्योहार हो वो तरह–तरह की चीज़ें बनाती थी। मम्मी के हाथों के गुलाब जामुन उसे बहुत पसन्द थे। मम्मी गीता आंटी के साथ मठरी बना रही थी, गीता आंटी बबलू के यहाँ झाड़ू–पोंछे का काम करती थी। मम्मी को जब भी

जरूरत होती थी तब वो उन्हें मदद के लिए बुला लेती। बबलू उन्हें हमेशा आंटी ही कहता था, वो भी उसको कितना प्यार करती थी। गीता आंटी आज अपने बेटे को भी लेकर आई थी। कृष्णा बबलू की ही उम्र का था, मम्मी अकसर उसके पुराने कपड़े कृष्णा को पहनने को दे देती थी। बबलू अपना होमवर्क पूरा करने में लगा हुआ था।

"माँ–माँ! देखो न हिंदी वाली टीचर ने ये कितनी कठिन कविता याद करने को दे दी है, मुझे तो याद ही नहीं हो रही है।" बबलू न जाने क्यों झुँझला सा गया था– "क्या हुआ बबलू! तुम इतना परेशान क्यों हो रहे हो? लाओ मुझे दिखाओ... अरे ये तो गोपाल दास नीरज जी की कविता है। कितनी सुन्दर कविता है–

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना,
अंधेरा धरा पर कही रह न जाये।
नई ज्योति के धर नए पंख झिलमिल
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन स्वर्ग छू ले।
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी
निशा की गली में तिमिर राह भूले।

बबलू आश्चर्य से मम्मी को देख रहा था, मम्मी ने एक साँस में कविता पढ़ डाली। मम्मी ने गैस की आँच धीमी की और बबलू की तरफ देखकर कहा– "किसी भी कविता को अच्छी तरह याद करना और समझना हो तो उसका अर्थ अवश्य जानो। एक बार अगर तुम्हें इसका अर्थ समझ आ जायेगा तो तुम्हारे लिए कविता याद करना आसान हो जायेगा। इस कविता में कवि कहना चाहता है कि इनसान को हमेशा ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे सबका भला हो और इस धरती पर दुःख रूपी अंधकार न रहे। हर तरफ सत्य और सदाचार का ऐसा बोलबाला रहे कि दुख रूपी अंधकार भी रास्ता भूल जाये।"

बबलू आश्चर्य से मम्मी का चेहरा देख रहा था, मम्मी ने इतनी कठिन कविता को आसानी से समझा दिया। अब तो वह चुटकियों में इसे याद कर लेगा। बबलू कृष्णा को देखकर बहुत खुश हो गया– "गीता आंटी! आज आप कृष्णा को लेकर आई है।" "हाँ बबलू! त्योहार है न... तुम्हारी मम्मी से पैसे लेने आई थी। यहाँ से काम करके बाजार जाऊँगी।"

"अरे वाह! आज तो कृष्णा के लिए नये–नये कपड़े, रंग और पिचकारी आयेगी।" बबलू की बात सुनकर आंटी का चेहरा उतर गया– "बेटा इतनी महँगाई है, इस कोरोना में कृष्णा के पापा की नौकरी भी छूट गई। मैं जितना कमाती हूँ उससे पेट भर जाये वही बहुत है। तुम्हारी मम्मी ने आज सुबह ही तुम्हारे कपड़े दिए है, कृष्णा होली के दिन वही पहनेगा।"

और रंग तो क्या, कृष्णा रंग नहीं खेलेगा। आखिर उसका भी तो मन करता होगा कि वो और बच्चों की तरह रंग लगाए, पिचकारी से खेले। बबलू सोचता–सोचता अपने कमरे में चला गया, थोड़ी देर बाद वह किचन में आया तो उसके हाथ में एक कागज की थैली थी। "कृष्णा! ये लो तुम्हारे लिए उपहार।" "क्या है भैया?" "तुम्हारे लिए रंग और पिचकारी है पर हाँ याद रखना ये रंग गीता आंटी या अपने पापा के साथ मिलकर ही खेलना। हैप्पी होली।" कृष्णा खुशी से झूम उठा, मम्मी आश्चर्य से बबलू को देख रही थी, बबलू को सचमुच में कविता का वास्तविक अर्थ समझ में आ गया था।

डॉ. रंजना जायसवाल
मीरजापुर (उत्तर प्रदेश)

''ढाक के तीन पात'' पृष्ठ 34 का शेष...

लगता जब मेरी मोटी डालियों और तने को जलाकर कोयला तैयार करते हैं।

मेरी छाल पर 'बछने' लगाने से एक प्रकार का गोंद भी निकलता हैं। जिसको 'चुनियाँ गोंद' या 'पलास का गोंद' कहते हैं। मुझे बछना लगने से बहुत दर्द होता हैं। क्या? 'बछना' का मतलब तुम्हें नहीं मालूम! अरे! लोहे से बना हुआ छोटा नुकीला भाला। तब मैं बहुत चिल्लाता हूँ, परन्तु शायद किसी को सुनाई नहीं देता। फिर भी मेरे इस दर्द की भरपाई करता है, हिन्दू शास्त्रों में मेरे वृक्ष को पवित्र माना जाना। यही मेरे लिए खुशी और सन्तोष की बात है।

उषा सोमानी
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

रात का राजा उल्लू

उल्लू समुद्री द्वीपों एवं दक्षिणी ध्रुव प्रदेश के अतिरिक्त सारे संसार में पाए जाते हैं। यह कई जातियों, प्रजातियों में विभाजित है। इनमें जाति भेद स्थानों की भिन्नता होने से होता है। संसार का सबसे छोटा उल्लू मैक्सिको के जंगलों में पाया जाता है। इसके पंख श्वेत छीटे युक्त बादामी रंग के होते हैं। इसकी आँखे बड़ी चमकदार, गोल, पीली होती है। इसकी गर्दन बहुत ही छोटी किन्तु अत्यधिक लचकदार होती है। इससे यह अपने गोल सिर को बड़ी सुविधा से पीछे की ओर घुमा सकता है। इसकी चोंच नोकदार कठोर होती है। साथ ही इसके पंजे भी बहुत मजबूत नुकीले होते हैं।

दक्षिण अफ्रीका के घने जंगलों में इसकी एक अन्य प्रजाति 'मत्स्य उल्लू' के नाम से जानी जाती है। इनका सिर पर्याप्त बड़ा होता है। इनका मूल निवास वृक्षों की झुकी हुई शाखाएँ, सूखे पेड़ों के खोखल और खंडहर स्थान है। जब ये उल्लू उड़ान भरते हैं तो इनका शरीर मछली की तरह दिखाई देता है। तब ऐसा लगता है मानो कोई मछली पानी से निकलकर उन्मुक्त उड़ान भर रही हो, मछली आकार के कारण ही ये 'मत्स्य उल्लू' कहलाते हैं।

हमारे देश में सर्वाधिक पाया जाने वाला उल्लू चितकबरा खूसटिया प्रजाति का होता है। यह आकार में लघु एवं मैना पक्षी की तरह होता है। यह मनुष्यों की बस्ती के करीब रहना पसन्द करता है।

आस्ट्रेलिया के बीहड़ जंगलों में 'भूरा उल्लू' पाया जाता है। ये संध्याकाल में पेड़ की शाखा या किसी दलदल किनारे समूह में बैठे शिकार का इन्तजार करते रहते हैं। इन उल्लुओं का आकार अपेक्षाकृत छोटा होता है। ये अधिकांश समय चीखते रहते हैं। इनके सिर पर श्याम व बादामी रंग के धब्बों से युक्त दो श्याम कलंगियाँ होती है। यह धब्बे सींग का आभास कराते हैं। शायद इसलिए इस उल्लू को 'सींगदार उल्लू' कहा जाता है।

यह एक निशाचर जीव है। चूहे, मेढक, छछूंदर, छिपकली, गिरगिट और सर्प का शिकार तेज तर्रार तरीकों से करता है। इसका शिकार करने का तरीका भी अजीब है। घने अँधेरे में जैसे ही इसे अपने शिकार की ध्वनि सुनाई देती है, तेजी से उसके पास जाकर अपने तीखे पंजों में जकड़ डालता है और उसका काम तमाम कर देता है। इसे देखना लोग शुभ नहीं समझते और इसकी चीखों को सुनना दुर्भाग्य का प्रतीक मानते हैं। हमारे देश के पुराणों के अनुसार यह 'लक्ष्मी' का वाहन भी कहलाता है।

वैसे उल्लू अपनी दिव्य दृष्टि, चौकन्नेपन, परोपकारी स्वभाव के कारण बड़ा चर्चित है और यह 'रात का राजा' कहलाता है। यह रात के सफर में ज्यादातर चूहों का भक्षण करता है जिससे यह किसानों की खेती और फसलों के लिए उपयोगी जीव है।

कमल सोगानी
भवानी मंडी (राजस्थान)

4 मार्च से 3 अप्रैल 2022

महिला वन डे क्रिकेट विश्वकप

महिला क्रिकेट की शुरुआत भी इंग्लैंड से हुई। कहा जाता है कि सन् 1300 में ही पुरुष क्रिकेट की देखादेखी इसकी शुरुआत हो चुकी थी हालाँकि महिलाओं का पहला क्रिकेट क्लब बनते–बनते 1887 में बना। ब्रेमले तथा हेमब्लेडन की टीमों के बीच पहली बार एक मैच 1745 में खेला गया। आधिकारिक रूप से इसे ही महिलाओं के बीच पहला मैच माना जाता है। क्रिस्टीन विलिस नामक महिला खिलाड़ी को ओवर आर्म गेंदबाजी शुरू करने का श्रेय जाता है। उस समय महिलाएँ स्कर्ट पहनकर मैच खेलती थी। अंडर आर्म गेंदबाजी करते समय स्कर्ट में उनका हाथ फंस जाता था। इसी से बचने के लिए उसने बाजू घुमाकर बाल फेंकने की शुरुआत की।

सन् 1887 में आठ महिलाओं ने मिलकर 'ह्वाइट हीदर क्रिकेट क्लब' की स्थापना की। करीब चार वर्षों में उसकी सदस्य संख्या पचास से भी ऊपर पहुँच गई। 1926 में महिला क्रिकेट एसोशिएशन का गठन किया गया। पहली बार अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने इंग्लैंड की टीम आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के दौरे पर 1934 में गई। पहला मैच इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया की महिलाओं के बीच हुआ। इतिहास को बदलते हुए इंग्लैंड की महिलाओं ने आस्ट्रेलियाई महिलाओं पर जीत हासिल की।

आमतौर पर पुरुषों ने क्रिकेट पर वर्चस्व हासिल किया है परन्तु क्रिकेट में विश्वकप आरम्भ करने का श्रेय महिलाओं को जाता है। पुरुषों के लिए एकदिवसीय क्रिकेट का विश्वकप 1975 में आयोजित किया गया परन्तु महिलाओं में इसका आयोजन इंग्लैंड में 1973 में ही हो गया था। कुल सात टीमों ने इसमें भाग लिया। इनमें इंग्लैंड की दो टीमें थीं तो एक अंतरराष्ट्रीय टीम भी इसमें खेल रही थी। फाइनल में इंग्लैंड ने आस्ट्रेलिया को 92 रनों से हराया।

सन् 2005 में हाल ही में दक्षिण अफ्रीका में विश्व कप का आयोजन हुआ। सीमित साधनों से खेलने के बावजूद भारतीय महिला क्रिकेटर शानदार खेल दिखाते हुए फाइनल तक पहुँची पर खिताबी मुकाबला वे आस्ट्रेलिया से हार गईं। आखिरी विश्वकप 2017 में इंग्लैंड में हुआ था। इसके फाइनल में भारत का सामना मेजबान देश से हुआ और यहाँ भी भारतीय महिलाएँ उपविजेता रहीं।

जो विश्वकप अब 4 मार्च से 3 अप्रैल 2022 तक न्यूजीलैंड में हो रहा है, वह वास्तव में पिछले साल होना था, पर कोविड के कारण यह स्थगित हो गया था। इस बार आठ टीमें इसमें भाग ले रहीं हैं :– भारत, आस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, पाकिस्तान, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड और वेस्ट इंडीज।

विश्वकप में फाइनल सहित कुल 31 मैच खेले जाएँगे। भारतीय टीम की घोषणा हो चुकी है। भारतीय टीम की कप्तान मिताली राज और उपकप्तान हरमनप्रीत कौर हैं।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

सबसे ज्यादा बार विजेता : आस्ट्रेलिया (6 बार)

सबसे ज्यादा मैच जीते : आस्ट्रेलिया (70 मैच)

सबसे अधिक रन बनाने वाली बैटर : डेब्बी हाकले, न्यूजीलैंड (1501 रन)

सबसे अधिक विकेट : लिन फुल्सटन, आस्ट्रेलिया (39 विकेट)

सर्वाधिक टीम टोटल : आस्ट्रेलिया (3 विकेट पर 412)

सबसे कम टीम टोटल : पाकिस्तान (27 रन)

आशु का उद्यान

पिछले वर्ष आशु अपने मम्मी–पापा के साथ दिल्ली में मुगल गार्डन देखने गया था। वहाँ इतने सारे, इतने सुन्दर, अलग–अलग किस्म के फूल देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया। उसने स्कूल में इन्द्रधनुष के बारे में पढ़ा था। कितना प्यारा लगता है वह, अलग–अलग सात रंगों के मेल से अद्‌भुत दृश्य बन जाता है। पर वह तो आकाश में बहुत दूर दिखाई पड़ता है। यहाँ तो इतने निकट से मैं इन रंग–बिरंगे फूलों में इन्द्रधनुष से भी अधिक रंगों को देख रहा हूँ। मैं तो इन्हें छू भी सकता हूँ।

फूल तो फूल, वे जिस कलात्मक तरीके से सजाए गए थे, वह तो और भी चकित करने वाला था। आशु दौड़ कर कभी उत्तर में फूलों के झुंड के पास जाता, तो कभी पूर्व की तरफ दौड़ पड़ता। वह कभी तितली के पीछे भागता, तो कभी फूलों को छूकर देखता। इतनी सारी रंग–बिरंगे पंखों वाली तितलियों को देखकर वह मचल जाता तथा उन्हें पकड़ने के लिए दौड़ने लगता। उसके मम्मी–पापा को उसे खींच कर वापस लाना पड़ता था। वह बहुत प्रफुल्लित था और वहाँ से वापस आने के लिए तैयार ही न था। बस तभी से आशु ने मन में एक सपना पाल लिया कि अब तो वह प्रति वर्ष मुगल गार्डन आकर इन सुन्दर फूलों का अवलोकन किया करेगा। उसने अपने पापा से प्रॉमिस भी ले लिया था। आशु ने पापा के मोबाइल से अनगिनत फोटो खींच डाले थे, जो सदैव उसकी स्मृति में भी बने रहे।

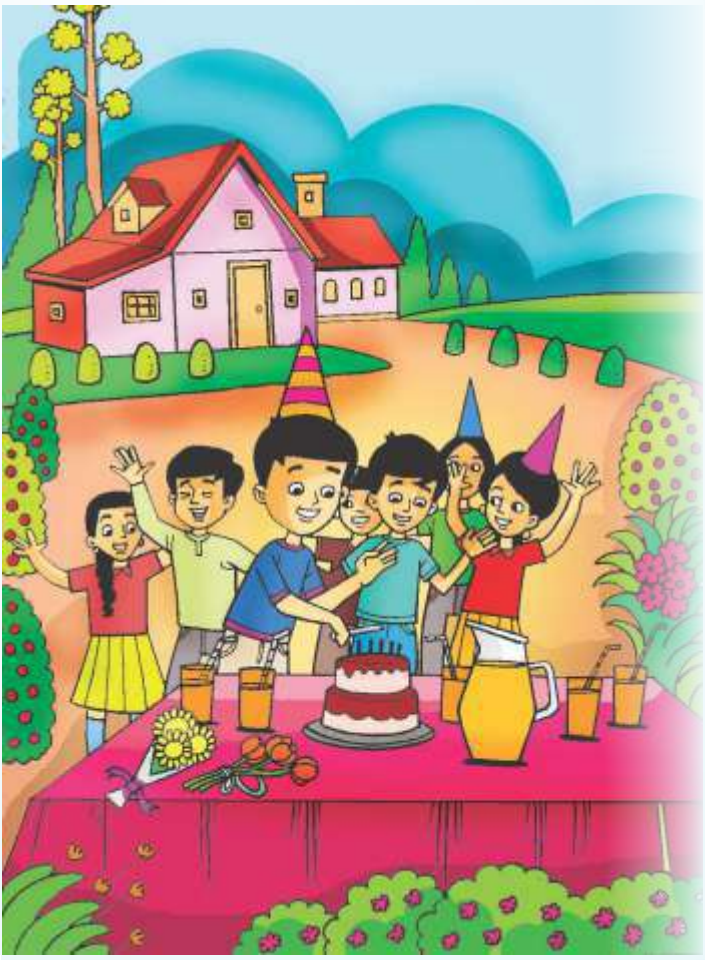

अगले वर्ष जैसे ही नवम्बर का महीना समाप्त हुआ, उसे मुगल गार्डन जाने की याद आ गई। ''पापा! हम इस बार भी दिल्ली मुगल गार्डन देखने जाएँगे न?" "बेटा! अब हम नोएडा में नहीं, यहाँ हैदराबाद में हैं। हैदराबाद से दिल्ली जाने का मतलब मुझे 3–4 छुट्टियों का इंतजाम करना पड़ेगा। अभी दो महीने पहले ही मेरा आफिस नोएडा से यहाँ शिफ्ट हुआ है, इसलिए अभी छुट्टी मिलना भी मुश्किल है।" आशु रुआँसा हो गया। "लेकिन पापा आपने मुझसे प्रॉमिस किया था।" "मुझे याद है बेटा, तब मैं दिल्ली के नजदीक नोएडा आफिस में था, वहाँ से तुम्हें रविवार के दिन सुबह ले जाकर शाम तक आसानी से वापिस लौट सकता था। लेकिन यहाँ से अभी सम्भव नहीं है। सॉरी बेटा!"

आशु पापा से कुट्टी करके, रूठ कर चला गया। वह अपने रूम में उदास बैठा था। तभी उसकी मम्मी पास आई और बोली– "आशु बेटा! पापा तुम्हें बहुत प्यार करते हैं। उनसे इस तरह नाराज नहीं होते, पापा की मजबूरी है। इस बार तुम मुगल गार्डन की शान गूगल पर ही देख लेना।" "नहीं मम्मा! मुझे फूलों को नजदीक से देखना और उन्हें छूना अच्छा लगता है।" फिर तो एक ही उपाय है।" आशु की आँखों में चमक आ गई। "वह क्या है मम्मी!" "तुम्हारे पापा को यहाँ इतना बड़ा सरकारी बंगला मिला है, क्यों न माली

काका से कह कर हम अपने घर में ही सुन्दर फुलवारी लगवा लें।" आशु तो एकदम चहक उठा– "हाँ, यही ठीक रहेगा मम्मी!"

अगले दिन माली के आते ही आशु ने कहा– "माली काका, अभी सर्दियाँ हैं, दिसंबर का महीना शुरू हुआ है। फरवरी तक तो हमारा बगीचा भी फूलों से भर जाएगा। आप खूब सारे फूलों वाले पौधे जैसे चंपा, चमेली, गुलाब, गुड़हल, गुल दुपहरी, रजनीगंधा, मोगरा, लिली, गेंदा आदि लगा देना। तब तो मजा आ जाएगा। "अरे बेटा, गर्मियों और सर्दियों के अलग–अलग किस्म के फूल होते हैं। इस समय मैं डहेलिया, पिटूनिया, पैंजी (बनफूल), गुलदाउदी, साल्विया, वरबिना, डॉग फ्लावर, पोपी और गुलाब की कई किस्में लगाऊँगा।"

"इतने सारे फूल काका!" आशु ने प्रसन्न होकर कहा। "हाँ बाबा! तुम देखना मैं रंग–रंग के फूलों से तुम्हारा बगीचा भर दूँगा।" "अरे वाह! फिर तो खूब सारी तितलियाँ भी आएगी यहाँ, जैसे मुगल गार्डन में थी।" वह प्रसन्नता से भर गया। आशु के पापा ने माली को बीज लाने के लिए रुपए दिए। माली काका समझते थे कि कुछ फूलों के बीज बोकर पौध तैयार की जाएगी तथा कुछ की कलमें रोपी जाएगी।

कुछ दिन बाद बीज फूटकर नन्हे–नन्हे पौधे बनने लगे। आशु एक–एक पौधे पर नजर रखता। वह माली काका के साथ गुड़ाई करने तथा पानी देने में मदद करता था। जैसे ही उनमें कलियाँ आईं, आशु की उत्सुकता बढ़ती गई और एक दिन ऐसा आया कि बहुत सारे नन्हे–नन्हे फूल खिलने शुरू हो गए। उसका उपवन रंग–बिरंगे फूलों से गुलजार हो गया। अब तो फूलों को भी अपने इस नए दोस्त आशु का इन्तजार रहता था कि कब वह हमारे पास आए और उसका जादुई स्पर्श हमें मिले।

धीरे–धीरे आशु की फूलों के प्रति रुचि बढ़ती गई और उसे फूलों के बारे में इतना अधिक ज्ञान हो गया था कि वह स्कूल में अपने दोस्तों से हर समय भिन्न–भिन्न प्रकार के फूलों की चर्चा करता रहता था। जब भी टीचर स्कूल में पौधों या फूलों के बारे में कुछ भी पढ़ाते, तो वह सबसे पहले उत्तर देता था। फूलों के प्रति उसका आकर्षण देखकर उसके सहपाठी उसे फूलकुमार कहने लगे थे।

संयोग की बात ही थी कि आशु का जन्मदिन 12 मार्च को था। इस बार उसने अपना जन्मदिन अलग तरीके से मनाने के लिए सोचा। उसने रेस्टोरेंट में न जाकर अपने दोस्तों को घर बुलाया। इस पर उसके दोस्त उसे कंजूस कहकर चिढ़ाने लगे। तब उसने स्पष्ट किया कि वह तुम सबको सरप्राइज देना चाहता है। अपने बहुत से दोस्तों से मिलवाना चाहता है। सभी दोस्त उसके सरप्राइज के बारे में जानने को उत्सुक थे। वे सब सज–धज कर उपहारों सहित आशु के घर पहुँचे।

मेन गेट से अन्दर आते ही बाहर लॉन के बीचों–बीच मेज पर केक सजा था। उसके चारों ओर लान में ही कुर्सियाँ रखी हुई थी। उसके दोस्तों की आँखें फटी की फटी रह गईं। इतना मन–मोहक उद्यान देखकर, आशु के फूलों के प्रति लगाव के लिए अब तो सबकी आँखों में प्रशंसा थी। सबने घूम–घूम कर रंग–बिरंगे फूलों की भिन्न–भिन्न किस्मों को ध्यान से देखा।

"वाऊ! आशु, तुम्हारे बागीचे में तो सचमुच असंख्य रंग बिखरे हैं। लाल, पीला, नीला, नारंगी, जामुनी, गुलाबी... ये सब फूल मेरे दोस्त हैं, इन्हीं से तो तुम्हें मिलवाना था। कितने उदार हैं ये... हमारी थोड़ी–सी मेहनत के बदले हमें झोली भर–भर मुस्कान बाँटते हैं। सबने आशु की हाँ में हाँ मिलाई। सभी ने अपने मन में प्रण लिया कि वे भी अपने घर में ऐसी ही फुलवारी लगाएँगे और फूलों को अपना दोस्त बनाएँगे।

आशु ने अपने मित्रों को रिटर्न गिफ्ट देने के लिए माली काका से पहले ही सुन्दर और सजे हुए गमले में फूलों के पौधे लगवा लिए थे। दोस्तों को विदा करते समय आशु ने कहा– "मेरे इन दोस्तों को सँभाल कर रखना। बदले में ये तुम्हें बहुत सारी खुशियाँ लौटाएँगे।" सभी बहुत खुश थे और आशु के इस अभिनव प्रयास की सराहना कर रहे थे।

डॉ. शील कौशिक
सिरसा (हरियाणा)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. भारत के पहले सीडीएस कौन थे ?
2. रेड डाटा बुक में क्या लिखा जाता है ?
3. आशु ने जन्मदिन पर रिटर्न गिफ्ट क्या दिया ?
4. मकड़ी और मच्छर कविता का क्या संदेश है?
5. पपीहा की उदासी कैसे दूर हुई ?
6. इस बार की नाटिका से क्या शिक्षा मिलती है ?
7. रात का राजा किस पक्षी को कहा जाता है ?
8. साइकिल पर कश्मीर से कन्याकुमारी की यात्रा किस बालक ने की ?
9. अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का मुख्य विषय क्या है?
10. मेघालय की कौन सी जगह सबसे अधिक बारिश होती है?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) प्याज की झिल्ली में कोशिका (ब) माइटोकोन्ड्रिया (स) तंत्रिका कोशिका Neuron (द) DNA
(2) साइटोलोजी (3) राबर्ट हुक (4) लाइसोसोम (5) 46 (6) पुरानी कोशिका के विभाजन से (7) ऊतक (Tissue) (8) शुतुरमुर्ग का अंडा (9) हरितलवक (Chloroplast) (10) लाल रक्त की कणिकाओं में।

अन्तर ढूँढ़िए

(1) गुब्बारे का आकार छोटा (2) टोपी का रंग अलग (3) पिचकारी का आकार बड़ा (4) Happy Holy अतिरिक्त (5) पिचकारी वाली बाल्टी गायब (6) हाफ पेन्ट का रंग अलग (7) एक लड्डू गायब (8) गुलाल की प्लेट अतिरिक्त

दिमागी कसरत

आगे पीछे, कच्चा पक्का, धूप छाया, नाराज प्रसन्न, दिन रात, बड़ी छोटी, अन्दर बाहर, भाई बहन, फूल काँटा, सर्दी गर्मी, विजय हार

बूझो तो जानें

(1) धूप (2) हवा (3) नदी
(4) ओस (5) लेखनी और अक्षर

वर्ग पहेली

1 अ	2 शो	क	3 ग	ह	4 लो	5 त	
6 म	णि		र		7 हा	कि	8 म
9 र	त	10 ला	म			11 या	क
ना		ल		12 ता	13 प		र
14 थ	15 ल	च	16 र		17 ह	ल	
	ख		18 वि	19 शा	ल		20 बं
21 क	प	ड़ा		22 स	वा		गा
23 क्ष	ति		24 म	न	न	शी	ल

सुडोकू

3	1	5	8	2	7	9	4	6
4	6	8	9	1	5	7	3	2
7	2	9	3	4	6	5	1	8
9	4	6	5	3	8	1	2	7
5	7	1	6	9	2	4	8	3
8	3	2	1	7	4	6	9	5
6	9	3	2	5	1	8	7	4
2	5	7	4	8	9	3	6	1
1	8	4	7	6	3	2	5	9

बच्चे समझ गए

आई है हमारी प्यारी होली
छोटू ने रंगों की थैली खोली।
नई पिचकारी ले आया
पानी के गुब्बारे भी लाया।

दोस्त भी यह चीजें लाए
खूब सारा वो पानी लाए।
सबने खेलना शुरू किया
गुब्बारे फेंकना शुरू किया।

पानी धीरे–धीरे खत्म हुआ
होली खेलना खत्म ना हुआ।
टंकी में पानी खत्म हुआ
अब सभी को फिक्र हुआ।

फिर से छोटू ने टंकी भरवाई
बोला, आओ होली खेले भाई।
दादा जी को यह नहीं भाया
सब बच्चों को पास बुलाया।

दादा जी ने एक राज बताया
पानी की बचत करें,समझाया।
समझ गए अच्छी बात बच्चे
सूखे रंग से खेलने लगे बच्चे।

पाखी जैन, कक्षा 4,
उदयपुर (राजस्थान)

अर्पित शर्मा, कक्षा 5, चित्तौड़गढ़

अर्हम सिपानी, कक्षा 7, दिल्ली

प्रेक्षा जैन, कक्षा-6, उदयपुर

आराध्या माहेश्वरी, कक्षा 4, हापुड़

अदिति चौरड़ा, कक्षा 7, अहमदाबाद

वर्द्धन तलेसरा, उम्र 8, नाथद्वारा

महक प्रज्ञा बोथरा, कक्षा 7, दिल्ली

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

8 मार्च : आधी आबादी का चेतना दिवस

सुंदर, गायत्री, ललिता, रेखा, बसंती, केसर, मंजु

महिला साक्षरता बैठक, गोगुन्दा ब्लॉक

केसर गमेती, मंजु कमरी मेघवाल
ललिता गमेती नाटक करते हुए

सुलोचना जैन

लाली गमेती

कृष्णा गमेती

हेमलता

हीना कँवर

रेखा गमेती

: सामग्री सौजन्य :

आई.आई.एफ.एल. फाउंडेशन द्वारा गाँवों में संचालित सखियों की बाड़ी केन्द्र ब्लॉक गोगुन्दा एवं प्रतापगढ़

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

सरपंच ने की अनूठी पहल

तमिलनाडु के थिम्मापुर में नस्तुलापुर के सरपंच ने गाँव में बेटा-बेटी का भेद समाप्त करने के लिए नई पहल की है। सरपंच रावुला रमेश गाँव में बेटियों के जन्म पर मिठाई बाँटने के साथ खुद हर बच्ची को 5 हजार रुपए की एफडी दे रहे हैं। इसे रमेश अन्ना कनुका योजना नाम दिया गया है। आसपास के तीन गाँव में भी योजना शुरू की जा रही है। उनकी प्रेरणा से बेटी के जन्म पर परिवार के लोग भी स्वेच्छा से 5 या 10 हजार की एफडी कराने लगे हैं।

साई आशीश पाटिल ने कर दिया कमाल

साइकिल पर कश्मीर से कन्याकुमारी की यात्रा पूरी करने के बाद 10 साल की साई आशीश पाटिल का उसके गाँव बालकुम ठाणे में परिजनों ने स्वागत किया। साई ने 4.165 किलोमीटर की यह यात्रा 38 दिन में पूरी की। साई चाहती है कि अधिक से अधिक लोग साइकिल का इस्तेमाल करें, जिससे पर्यावरण को बचाया जा सके।

लोहे के कबाड़ से बन रहा स्क्रैप गार्डन

जोधपुर के सुरपुरा बाँध के पास चंडीगढ के रॉक गार्डन की तरह स्क्रैप गार्डन तैयार किया जा रहा है। यहाँ लोहे के कबाड़ से वन्यजीवों की कलाकृतियाँ बनाना का कार्य शुरू हो गया है। सबसे पहले स्क्रैप धातु से रेगिस्तान का जहाज ऊँट बनाया गया है जिसकी ऊँचाई 16.5 फीट, वजन तीन टन एवं उत्तरप्रदेश के दस कारीगरों ने एक माह में तैयार किया है। इस गार्डन में डायनासोर, शेर व बन्दर आदि वन्यजीव बनाए जाएँगे।

अनूठा निमन्त्रण कार्ड

भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय ने इस वर्ष 26 जनवरी गणतन्त्र दिवस परेड के लिए ऐसा अनूठा निमन्त्रण कार्ड बनाया है जिसे नम मिट्टी की एक पतली परत में रखकर धूप के बीच पानी पिलाया जाता है तो इस निमन्त्रण पत्र से अंकुर फूटेंगे। आँवला का पौधा तैयार होगा जो आपके स्वास्थ्य को भी बढ़ाएगा। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यह एक सकारात्मक कदम है।

दुनिया का सबसे वृद्ध कछुआ

दक्षिण अटलांटिक में सेट हेलेना का सुदूर द्वीप में सन् 1882 से दुनिया का सबसे बड़ा कछुआ जोनाथन का घर है। वह टेंडपोल श्रिमप्स नस्ल का कछुआ हैं यह नस्ल पृथ्वी पर मौजूद सभी प्राणियों में सबसे पुरानी वंशावली है। दुनिया का सम्भवतः सबसे वृद्ध जीव 189 साल का कछुआ अब न देख सकता है और न ही सूँघ सकता है। यह कुछआ कई घंटे बिना साँस लिये पानी में तैर सकता हैं। इस कछुए के बारे में जानकारी रखने वाले पशु चिकित्सक जो हॉलिन्स का कहना है कि दो शताब्दियों में अपने सबसे अच्छे दिन गुजरने के बाद यह कछुआ मोतियाबिन्द से अंधा हो चुका है।

15 साल के अजीम ने पेरियार नदी पार की

कोझिकोड के 15 साल के दिव्यांग मोहम्मद अजीम ने पेरियार नदी पार कर सपना सच कर लिया है। दरअसल, अजीम के जन्म से ही दोनों हाथ नही हैं । पर उसका सपना था कि वह नदी को खुद तैरकर पार करे। इसके लिए उसने कोच की मदद ली।

I like the most...

I like the most my country India. It is the seventh largest country in the world. Our country is a huge and beautiful land full of wonders from the Himalayas to the Indian Ocean, desert of Thar to the snowy mountains of Sikkim. It is a country full of beautiful landscapes and lovely people. India is a unique country with diversity. "Unity in Diversity" is the main slogan of our country. India has 28 states and 9 union territories. I am form Udaipur district of Rajasthan. I like my country the most because “Right to Equality” is the fundamental right assured to the people of India.

Rachana Soni, Class - 10th , Udaipur,(Rajasthan)

The thing I like the most is my teddy bear that I used to play with in my childhood. It is pink in colour with soft and furry body ,two small eyes, a big nose and two cute ears, two hands and legs and a battery on its stomach when pressed says "Happy Birthday to you". When I was born, my mother and father gifted it to me. There were many toys to play but this teddy bear attracted me the most. My teddy bear's name is 'Butterscotch'. I got her name from my favorite icecream. I always keep my teddy bear on my bed near the pillow. I take good care of my teddy bear.

Prisha Chokhda, Class-7, Thane (Maharashtra)

I like dancing and cooking the most. I also love to draw but dancing and cooking give me satisfaction after doing these activities. I like to cook new dishes for others. Trying new dishes and cooking them is like an adventure. If you fail, still it is not like a big disappointment. Dancing is what I love to do because learning steps gives me happiness and confidence. Dancing is like unfolding craziness in you. While dancing, I reach to another world because while dancing I just loose every frustration, sadness and pressure of studies. That's why I like dancing and cooking the most.

Bhumi Bisht, Class 9, Udhamsingh Nagar(Uttarakhand)

(We received these views from the BKD Creativity Club members on the given topic “I like the most”.)

Wicked Brother

Based on a Korean folk tale.

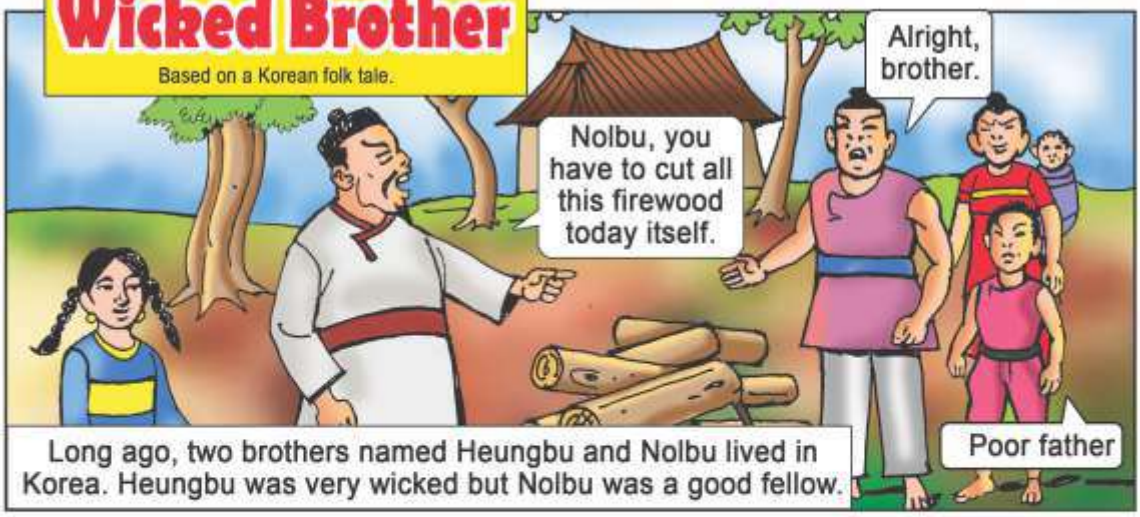

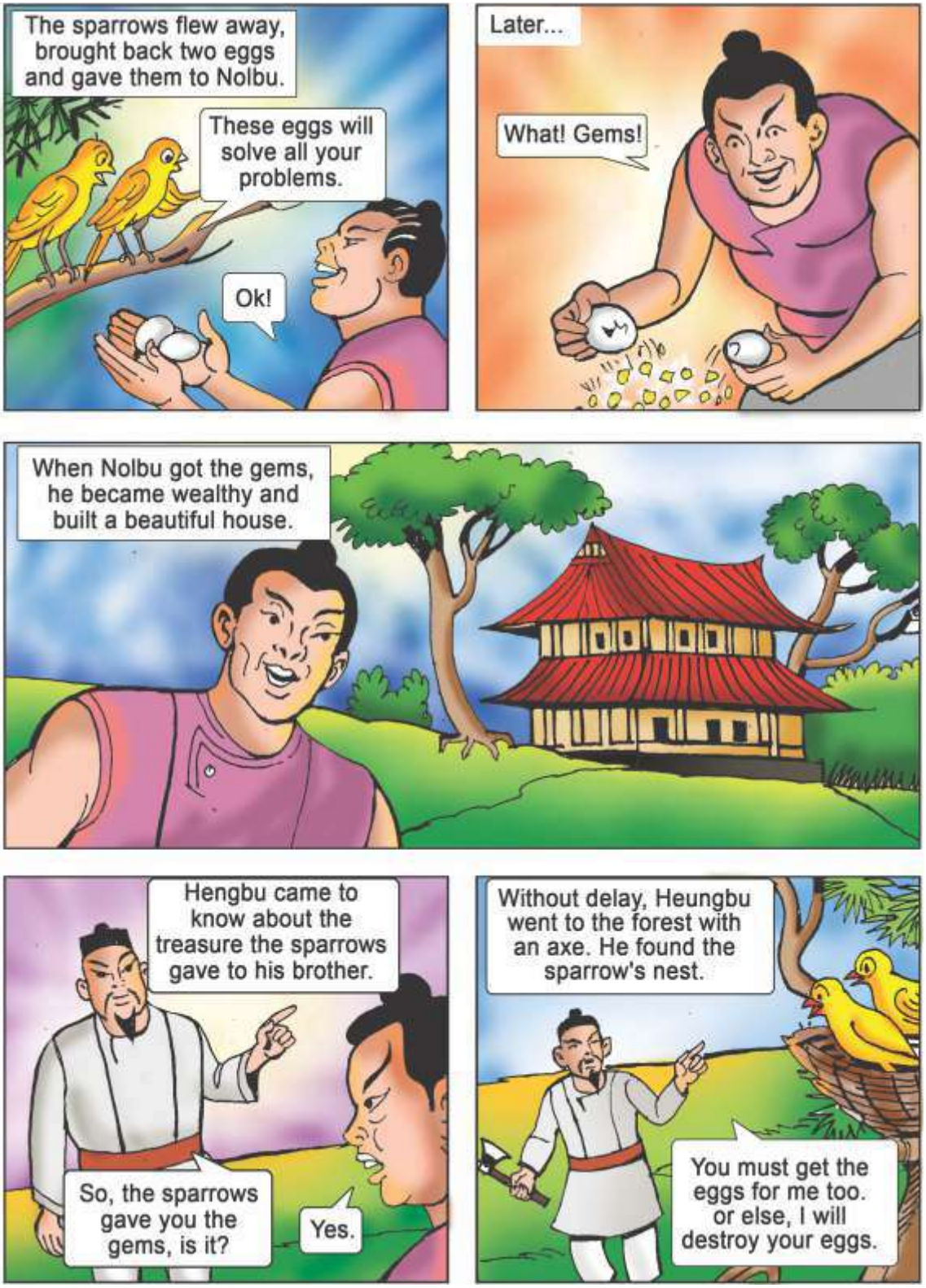
The sparrows flew away, brought back two eggs and gave them to Nolbu.
These eggs will solve all your problems.
Ok!
Later...
What! Gems!
When Nolbu got the gems, he became wealthy and built a beautiful house.
Hengbu came to know about the treasure the sparrows gave to his brother.
So, the sparrows gave you the gems, is it?
Yes.
Without delay, Heungbu went to the forest with an axe. He found the sparrow's nest.
You must get the eggs for me too. or else, I will destroy your eggs.

Hey, my eggs have already hatched and my babies have flown away.
Hm, can't you hear what I said? Give gems to me too.
Must teach him a lesson.
The sparrow then gave three eggs to Heungbu.
Here, take these eggs.
Yes! Now, I will be wealthier than my younger brother.
Heungbu took the eggs home and broke them.Suddenly, strange creatures emerged with fire in their mouths.
Hey, whats happening? Children, escape!
Within seconds, they burned Heungbu's house into ash.
Later, Nolbu gave shelter to the wicked Heungbu.
Please forgive me, brother. I was wrong.
Brother, eat these fruits.

Count and Colour

Look at the pictures. Then answer the following questions.

How many children in the car? ☐

How many blue spots on the wheels? ☐

How many red stars on the car? ☐

How many butterflies near the car? ☐

Know these birds

Match each bird to the correct description by drawing lines.

किड्स कॉर्नर

ostrich

parrot

crow

peacock

- A bird with shiny black feathers. It cleans our surroundings.
- A medium-sized, colourful bird. It is the National Bird of India.
- This bird can mimic any sound. It is very intelligent. It eats fruits and seeds.
- It is the largest bird. It cannot fly.

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान

ANUVRAT CREATIVITY CONTEST

प्रतियोगिताएं

लेखन | चित्रकला | गायन | भाषण

विषय

पर्यावरण का संरक्षण
दायित्व हमारा हर क्षण

स्कूल स्तर पर प्रतियोगिता के प्रथम चरण की अंतिम तारीख

31 जुलाई, 2022

राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार

ग्रुप-1 : कक्षा 3-5, ग्रुप -2 : कक्षा 6-8, ग्रुप-3 : कक्षा 9-12

अधिक जानकारी के लिए

https://anuvibha.org/acc
acc@anuvibha.org
+91-91166-34514

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

सहयोगी प्रकल्प

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

एस.आर.डी. वैद्यनाथन

जन्म : 15 मार्च, 1929 ■ निधन : 18 नवम्बर, 2013

तमिलनाडु के मयिलादुथुराई में जन्में लोकप्रिय संगीतकार एसआरडी वैद्यनाथन ने विरासत में प्राप्त नागस्वरम संगीत परंपरा को समृद्ध किया। आपने विश्वविद्यालय में संगीत के रीडर पद से तथा आकाशवाणी के माध्यम से संगीत के प्रसार की दिशा में विशेष कार्य किया। संगीत के क्षेत्र में आपने अनेक नवीन प्रयोग किए। आप संगीत नाटक अकादमी व अन्य अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं से सम्मानित हुए।

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक